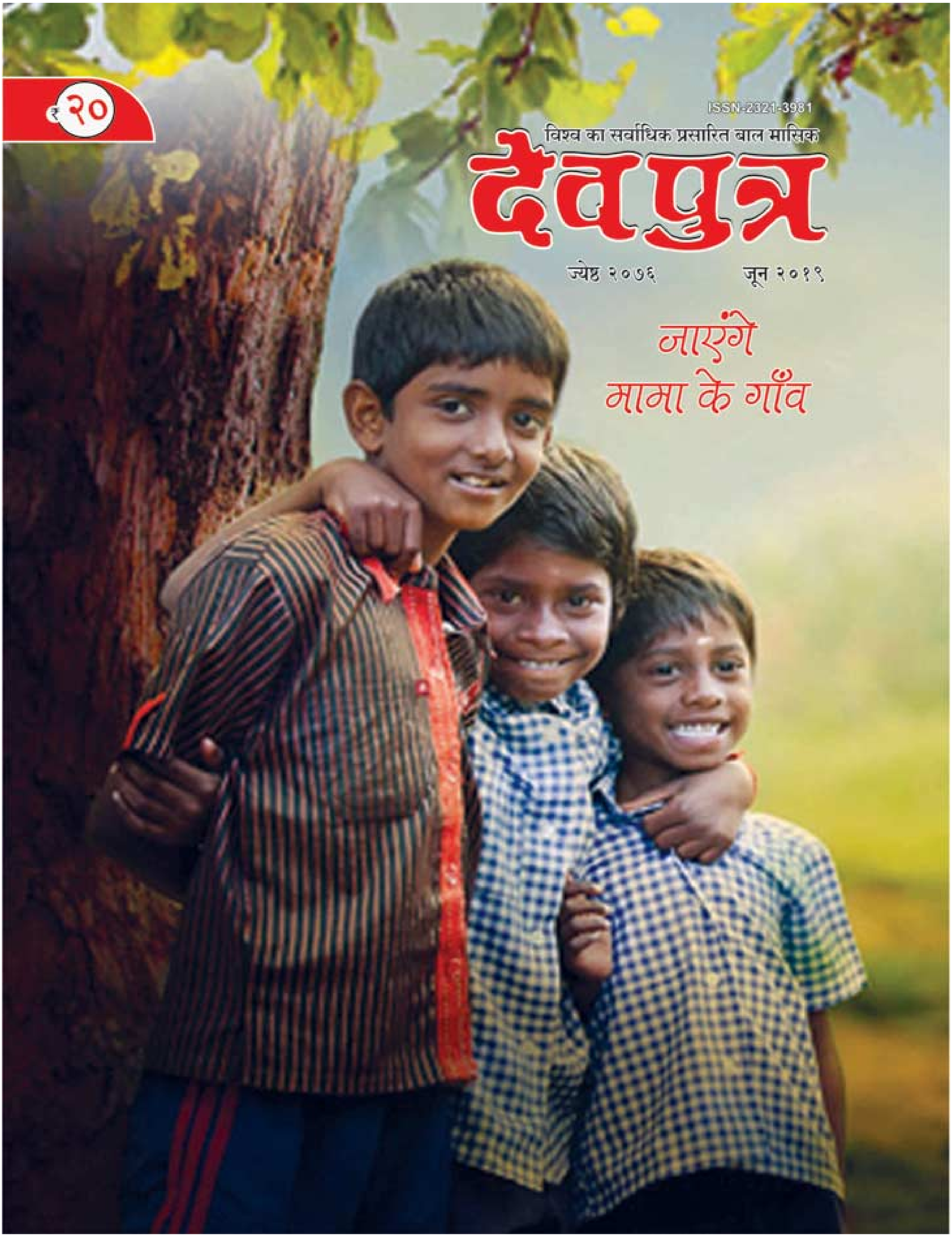
₹ २०
ISSN-2321-3981
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
ज्येष्ठ २०७६
जून २०१९
जाएंगे मामा के गाँव

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

7 जून
शाम 6:30 बजे

हिन्दी साहित्य

वैकल्पिक विषय (वीडियो क्लासेज़)
द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति
12 जून, प्रातः 11:30 बजे

समाजशास्त्र

वैकल्पिक विषय :: द्वारा- प्रवीण पांडेय
14 जून, प्रातः 8:00 बजे

इतिहास

वैकल्पिक विषय :: द्वारा- अखिल मूर्ति
12 जून, प्रातः 8:00 बजे

भूगोल

वैकल्पिक विषय :: द्वारा- कुमार गौरव
15 जून, प्रातः 8:00 बजे

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

डॉ. विकास दिव्यकीर्ति की
ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

बैच - 1
19 मई, रविवार
प्रातः 11:15 बजे

बैच - 2
19 मई, रविवार
शाम 6:00 बजे

हिन्दी साहित्य

वैकल्पिक विषय (वीडियो क्लासेज़)
द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

भूगोल

वैकल्पिक विषय
द्वारा - श्री वी.के. त्रिवेदी

इतिहास

वैकल्पिक विषय
द्वारा - श्री अख़्तर मलिक

दिल्ली- 8448485519, 8448485520, 87501-87501 | प्रयागराज-8448485518, 8929439702, 87501-87501

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ	२०७६	वर्ष ३९
जून	२०१९	अंक १२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या – 53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

पिछले दिनों एक बड़ा रोचक चित्र एक अध्यापक ने इंटरनेट पर प्रेषित किया। इस चित्र में बच्चों को एक पहेलीनुमा प्रश्न दिया गया था जिसमें कहा गया था यह बिल्ली का भूखा बच्चा है इसे दूध के कटोरे तक पहुँचाइए? एक बच्चे ने उस भूल भुलैया में भटकने के बजाय एक सीधी रेखा बनाकर बिल्ली के बच्चे को दूध तक पहुँचा दिया था। अध्यापक ने इसे विशिष्ट बुद्धि मानकर न केवल इस उत्तर को तारांकित उत्तर (समस्त उत्तरों में श्रेष्ठ) माना बल्कि उसे सही मानते हुए विद्यार्थी को पूरे अंक भी दिए। अध्यापक ने इस चित्र के साथ अपनी टिप्पणी करते हुए लिखा था- ''मैंने जब उस नन्हें देवदूत से पूछा तुमने भुल भुलैया से रास्ता क्यों नहीं बनाया? क्या बाकी मित्रों की तरह तुमको वह रास्ता खोजना नहीं आता था?''

नन्हे ने उत्तर दिया- ''आता तो था किन्तु उस रास्ते से जाने में बच्चे को देर लग जाती। वह छोटा सा बच्चा भूखा था इसलिए मैंने बगैर समय व्यर्थ किए उसे सीधे दूध तक पहुँचा दिया।''

अध्यापक आगे कहते हैं- ''उस बच्चे के उत्तर ने मुझे मूर्तिवत् कर दिया। यदि मैं उसके उस उत्तर को गलत कर देता तो मेरा पढ़ाना व्यर्थ हो जाता।''

सचमुच हम पढ़ते किसलिए हैं? क्या केवल अपना IQ (इन्टेलिजेंस कोशेन्ट) बढ़ाने के लिए या EQ (इमोशनल कोशेन्ट) बढ़ाने के लिए? यदि हम संवेदनशील ही नहीं बन पाए तो हमारा पढ़ना व्यर्थ है। आज बिल्ली के बच्चे की भूख ने हमें बैचेन किया तो ही कल भारत का प्रत्येक भूखा व्यक्ति हमें अपना भाई लगेगा।

आइए इस 'देवदूत' की तरह विशिष्ट सोच (आऊट ऑफ द बॉक्स थिंकिंग) विकसित करें तभी हम सब बच्चे 'देवपुत्र' बन सकेंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

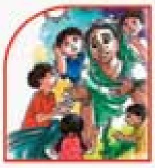
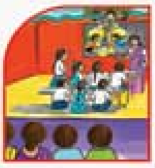

कहानी

- पक्का वचन - पवित्रा अग्रवाल ०५
- स्वच्छता - पवन कुमार वर्मा १४
- जादुई बर्तन - डॉ. मंजरी शुक्ला २८
- गाँव की ओर - किशनलाल शर्मा ४४

अनुवाद

- सिंहराज करे सफाई - शिवचरण मंत्री १८

नाटिका

- पर्यावरण - पूजा हेमकुमार अलापुरिया ०८

कविता

- महाराणा प्रताप - रामगोपाल राही ०७
- वीरांगना लक्ष्मीबाई - गोपाल कौशल १७
- धरा घबराती है - राजेन्द्र निशेश २१
- योग तंत्र - डॉ. रानी कमलेश ३५
- छुट्टियों के दिन - डॉ. कविता विकास ४१
- मोर दादा - रजनी बस्तरिया ४१
- क्षणिका - डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा ४५
- नानी सुनाओ नई... - महावीर रवांल्टा ४७

प्रसंग

- साधनों का उपयोग - प्रो. जमनालाल बायती ३४
- स्वामी हरिदास - संकलित ४७
- तानसेन - संकलित ४८

ललित निबंध

- मैं पीपल का पेड़ हूँ - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ १२
- एक था जंगल - अंकुश्री ३८

चित्रकथा

- बातें है बड़ी-बड़ी - देवांशु वत्स ११
- आविष्कार - नरेन्द्र ठाकुर २०
- ओजोन परत... - संकेत गोस्वामी २४

बाल प्रस्तुति

- नदी - अदिति पटेल १०
- सफलता - विजय वैष्णव ३६
- पहेलियाँ - नमन श्रीवास्तव ४३

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (२८) - २२
- संस्कृति प्रश्नमाला - ३०
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३१
- आपकी पाती - ३३
- पुस्तक परिचय - ४६

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना-

editordevputra@gmail.com पर भेजिए।

अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है-

खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**

बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**

खाता क्रमांक - **53003592502**

IFSC- **SBIN0030359**

राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।

नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।

उदाहरण के लिए -

सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -

"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

पक्का वचन

कहानी : पवित्रा अग्रवाल

घंटी की आवाज सुनकर सोनू ने दरवाजा खोला तो सामने मकान मालकिन दीदी खड़ी थीं।

''बेटा आपकी माताजी घर पर हैं?''

''नहीं दीदी माँ तो घर पर नहीं है, पर दादाजी हैं।''

आवाज सुनकर दादाजी भी आ गए थे– ''हाँ कहिये बहनजी!''

''अब क्या कहूँ मैं दूसरे किरायेदारों की शिकायत सुन सुन कर तंग आ गई हूँ कि पान की पीक से सीढ़ियाँ बहुत गंदी हो गई हैं, पर मैं भी क्या करूँ? सब से कहती हूँ कि पान थूकने वाले का नाम बताओ तो मैं कुछ करूँ भी, पर हर बार आपका नाम सामने आता है।

'नहीं बहनजी! मैं पान खाता हूँ इसलिए सब का संदेह मुझ पर जाता है, मेरा भी तो रास्ता यही है, मैं उसे गंदा क्यों करूँगा...बाहर से आने वाले भी तो थूक सकते हैं।''

''हाँ भाई साहब! मुझे भी आप इतने असभ्य तो दिखाई नहीं देते... पर कई लोगों ने आप को थूकते देखा है ... अब इस विवाद से कोई लाभ नहीं है, मैंने पुताई करने वाले को बुलाया है, आज तो मैं सब साफ करा देती हूँ पर मन में यही डर है कि कोई मूर्ख इसे फिर गन्दा कर देगा। अपने यहाँ आने वालों की भी जाँच करिए... पुताई कराए दस पन्द्रह दिन हो गए थे पर अभी तक सीढ़ी साफ थीं।

पर एक दिन फिर दीवारों पर पान थूका हुआ था। यह बात ऊपर वालों ने देखी पर दीदी से शिकायत करने कोई नहीं गया। सोनू ने भी यह सब देखा पर इस बार उसे भी विश्वास नहीं था कि यह काम दादाजी का ही है।

सोनू ने चुपके से दादाजी पर नजर रखनी शुरु की और वह यह देख कर दंग थी कि दादाजी ने वहाँ फिर से पान थूकना शुरु कर दिया है।

एक दिन विद्यालय से लौटते हुए सोनू को मकान मालकिन दीदी मिल गई। उन्होंने कहा– ''बेटी! देखो अभी तो रंग कराया था, सीढ़ी फिर गंदी कर दी गई हैं... क्या तुमने किसी को यहाँ पान थूकते देखा हैं?''

''सोनू के मुँह से एकदम से निकल गया कि हाँ मेरे दादाजी थूकते हैं।''

तभी दादा जी सीढ़ी उतर कर आते दिखे तो दीदी ने कहा– ''भाई साहब! आपने फिर यहाँ थूकना शुरु कर दिया?

''अरे! आप बिना देखे मेरा नाम कैसे लगा सकती हैं?''

''मुझे तो पहले से पता था कि यहाँ आप ही थूकते हैं पर मैंने नहीं देखा था... आज तो आपकी सोनू भी यही कह रही है, अब इस जगह को मैं नहीं, आप साफ कराएंगे।''

''सोनू! मैंने यहाँ कब थूका?''

''दादाजी! मैंने आपको बहुत बार यहाँ थूकते

देखा है।''

''हाँ यह सच है कि मैं पहले कभी कभी यहाँ थूक देता था पर जब से रंग हुआ है मैंने एक बार भी नहीं थूका है।''

''अब मैं आप से क्या कहूँ दादाजी! कह कर सोनू ऊपर अपने घर चली गई।

पीछे पीछे दादाजी भी चले गए।

''सोनू! तुमने दादी से यह क्यों कहा कि दादाजी पान थूकते हैं।''

''मैंने झूठ तो नहीं कहा दादाजी!... आप ही तो हमें सिखाते हैं कि झूठ नहीं बोलना चाहिए पर आप स्वयं ही ...आप को वहाँ पान थूक कर क्या आनंद आता है दादाजी!''

''क्या करूँ घर में वाश बेसिन में थूकता हूँ तो तेरी माँ को अच्छा नहीं लगता...फिर वह काम वाली भी चिल्लाती हैं कि पान थूकोगे तो मैं बैसिन साफ नहीं करूँगी... हर समय भाग कर बाहर तो नहीं जा सकता?''

''दादाजी! एक सुझाव दूँ... यदि आप तंबाकू वाला पान खाते हैं तो वह खाना छोड़ दीजिए।''

''नहीं बेटी! मैं तंबाकू नहीं खाता.. फिर भी प्रयास करूँगा कि पान खाना कुछ कम कर दूँ।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है ... पर आप एक काम कर सकते हैं... पान आप वाश बेसिन में ही थूकिए पर तभी पानी डाल कर साफ कर दीजिए तो किसी को भी शिकायत नहीं रहेगी।''

''ठीक है बेटी! आगे से मैं ऐसा ही करूँगा और सीढ़ियाँ भी साफ करा दूँगा।''

''दादाजी! वचन देते हैं।''

''हाँ बेटा! पक्का वचन देता हूँ।''

''मेरे अच्छे दादाजी! मेरे प्यारे प्यारे दादाजी!

• हैदराबाद (तेलंगाना)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

राजू के हाथ में एक स्त्री की तस्वीर है। वह रागिनी से कहता है - 'यह फोटो वाली महिला मेरे दादाजी के एक मात्र पुत्र की पुत्री है!' क्या तुम बता सकते हो कि राजू ने किसकी तस्वीर हाथ में ली हुई है?

(उत्तर इसी अंक में)

॥ जयंती : ६ जून ॥

महाराणा प्रताप

कविता : रामगोपाल राही

आओ बच्चो सुनो कहानी,
देश के गौरव गान की।
वीर रत्न अनमोल अनूठी,
महाराणा की शान की॥

स्वतंत्रता के परम उपासक,
उनकी अमर कहानी है।
थे पौरुष के धनी वीरता,
गाथा अमिट निशानी है॥

महाराणा प्रताप कि जिनका,
अपना शौर्य महान था।
मातृभूमि की रक्षा हेतु,
उनका रण आव्हान था॥

हल्दीघाटी गूँज उठी थी,
राणा की जयकारों से।
कण-कण गूँजा तलवारों की
प्रत्यंचा टंकारों से॥

भीषण रण था बात न पूछो,
दुश्मन मरे प्रहारों से।
चेतक पर राणा थे उनके,
भाले तीखे वारों से॥

चले तीर पर तीर और था,
तीव्रनाद शमशीरों का।
बड़ा अदम्य साहस लड़ते,
महाराणा के वीरों का॥

आग उगलती दुश्मन तोपें,
बरसाती अंगारे थीं।
लाशें अनगित खून की निकली,
धारें ऊपर धारें थीं॥

पर दुर्भाग्य से पासा पलटा,
अब दुश्मन की बारी थी।
मेवाड़ी सूरज की प्यासी,
वह तलवार दुधारी थी॥

अकबर था सम्राट देश का,
मार सका ना पकड़ सका।
निर्भय निडर निरंकुश राणा,
वह उनको ना जकड़ सका॥

मेवाडी सूरज महाराणा,
जिससे उसे न चैन था।
विपुल सैन्य बल का स्वामी,
पर हर दम ही बैचेन था॥

देश के गौरवमय इतिहास को,
महाराणा पर नाज है।
महाराणा प्रताप विश्व में,
वीरों में सरताज है॥

• लाखेरी (राज.)

पर्यावरण

नाटिका : पूजा हेमकुमार अलापुरिया

(प्रस्तुत लघु नाटक हमारे पर्यावरण की जर्जर होती स्थिति पर आधारित है। आज मनुष्य स्वार्थी हो गया है। वह अपनी भौतिक आवश्यकताओं के लिए जंगलों का विनाश कर रहा है तथा आधुनिक यंत्रों द्वारा पर्यावरण को दूषित कर रहा है। नाटक के आरम्भ में मंच पर कक्षा का दृश्य।)

छात्र – (कक्षा में शिक्षिका प्रवेश करती है) नमस्ते दीदी!

शिक्षिका – नमस्ते बच्चो! बैठो!

अरे वाह! आज तो रोहन का जन्मदिन है। हमें रोहन को जन्मदिन की बधाई देनी चाहिए। (सभी एक साथ मिलकर बधाई गीत गाते हैं।)

रोहन– धन्यवाद दीदी!

शिक्षिका – रोहन! आज तुम्हें जन्मदिन के उपलक्ष्य में बहुत सी बधाइयाँ और अनेक उपहार भी मिलेंगे। जिससे तुम्हें अपार प्रसन्नता भी होगी।

रोहन – जी दीदी! जब हर किसी से जन्मदिन की बधाई मिलती है तो मेरी तो प्रसन्नता का ठिकाना ही नहीं रहता।

शिक्षिका– ये तो बहुत अच्छी बात है। अच्छा एक बात बताओ आज तुमने अपना जन्मदिन किस तरह मनाने की योजना की है?

रोहन– कुछ विशेष नहीं। गत वर्षों की तरह आज भी पहले माताजी–पिताजी के साथ सेवा–आश्रम जाऊँगा और फिर अपने कुछ दोस्तों के साथ ही जन्मदिन मनाने वाला हूँ। और कुछ विशेष नहीं...।

शिक्षिका – (रोहन के आश्रम जाने वाली बात सुन शिक्षिका अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए।) ये तो बहुत आनंद की बात है रोहन कि तुम अपने जन्मदिन के उत्सव में अनाथ और निराश्रित लोगों को भी सम्मिलित करते हो। इससे तुम्हें तो प्रसन्नता भी अनुभूति होती ही है मगर इससे अधिक आश्रम में रहने वाले उन निराश्रित वृद्धों और बच्चों को होती है। तुम्हारे माता–पिता ने तुम्हें अच्छे संस्कार दिए हैं।

मगर बच्चो! हमारा जन्मदिन हम सभी के लिए बहुत विशेष होता है, इसलिए हमें इस दिन कुछ विशेष काम करना चाहिए, जो हमारे लिए एवं हमारे पर्यावरण के लिए लाभकारी हों।

छात्र – वह कैसे दीदी! (सभी छात्र एक साथ पूछते हैं)

शिक्षिका– विद्यमान समय में प्रकृति एवं वसुंधरा में अनेकानेक परिवर्तन द्रष्टव्य है। वे सभी परिवर्तन मनुष्यजीवन के लिए अनिष्टकारी हैं। धरा का तापमान नित बढ़ता ही जा रहा है, पृथ्वी की सुन्दरता एवं मनमोहकता कहीं लुप्त हो रही हैं, धरती पर उपलब्ध पेयजल की शुद्धता धीरे–धीरे नष्ट हो रही है।

नक्ष– (कुछ नटखट पन से हँसते हुए) परिवर्तन? कैसा परिवर्तन?

शिक्षिका– पुराकाल में हमारी धरती वनस्पतियों से परिपूर्ण थी। परिवेश में स्वच्छ वायु एवं जल प्रवाहित होता था। मगर मनुष्य ने अपने स्वार्थ के कारण वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की, मनोरंजन हेतु प्राणियों को मारना आरम्भ कर दिया, इतना ही नहीं बल्कि अपने दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले जल और वायु को भी पूर्णतया दूषित कर दिया है।

छात्र– परन्तु दीदी! यह प्रदूषण है क्या? कृपया हमें समझाओ न।

शिक्षिका– जब धरती की वायु दूषित हो जाती है तो उसे प्रदूषण कहते हैं। आप जानते हो बच्चो! पहले हमारी पृथ्वी हरी–भरी थी। पेड़ पौधे हमें शुद्ध वायु के रूप में ऑक्सीजन प्रदान करते थे। इन पेड़–पौधों से शुद्ध फल, सब्जियाँ आदि प्राप्त होता था। मगर मनुष्य ने इन पेड़ पौधों की अंधाधुंध कटाई कर पूरा वातावरण प्रदूषित कर दिया।

धीरू – दीदी! आखिर मनुष्य की इस अज्ञानता का क्या परिणाम होगा?

शिक्षिका– बहुत ही अच्छा प्रश्न किया है तुमने। मानव यही सोचता है कि उसकी इन अज्ञानता का कोई दुष्परिणाम नहीं होगा। मगर वह इस बात से अपरिचित है कि वृक्षों, शुद्ध वायु, शुद्ध जल के अभाव में उसका जीवन असंभव है।

वृक्षों के कटने पर ऑक्सीजन कहाँ से मिलेगी? वृक्ष नहीं होगे तो वर्षा कैसे होगी? वृक्षों के न रहने पर धरती के तापमान का स्तर बहुत अधिक हो जाएगा, जिससे धरती पर जीना कठिन हो जाएगा।

छात्र – विज्ञान बहुत प्रगति कर चुका है इसलिए गर्मी दूर भगाने के लिए हमारे पास ए.सी., कूलर, पंखे आदि हैं। तो फिर कैसी चिंता?

शिक्षिका– नहीं! मेरे प्यारे छात्रो। आज मानव की यही मनोवृत्ति हो गई है कि गर्मी दूर भगाने का सबसे सुगम एवं सरल सहारा आधुनिक यंत्र हैं। लेकिन इसके भी दुष्परिणाम है। इन्हीं विद्युतीय यंत्रों के कारण ही ओजोन

परत में छिद्र हो गए है। उन छिद्रों से निकलने वाली पराबैंगनी किरणें हमारे मानव समाज के लिए हानिकारक है। इतना ही नहीं ये कृत्रिम यंत्र कूलर, पंखे, ए.सी. आदि भी खराब हो जाएँगे, तब यह मानव क्या करेगा?

(पर्यावरण की वास्तविकता से अवगत होने पर रोहन दीदी से कहता है।)

रोहन– (थोड़ा सोचते हुए और गहरी लम्बी साँसे लेते हुए) हाँ, दीदी! मैं समझ गया कि मेरे जन्मदिन के अवसर पर कुछ विशेष करने से आपका क्या तात्पर्य था। मैं आज ही एक पौधा लगाऊंगा और उसका पूरा-पूरा ध्यान भी रखूँगा। वृक्ष होंगे तो ही हमारा जीवन संभव है।

छात्र– दीदी, हम आज से वृक्ष काटने वालों का विरोध करेंगे तथा अपने विद्यालय में भी अन्य छात्रों प्रकृति और वृक्षों के महत्त्व से अवगत कराएँगे।

हम सभी प्रण लेते है कि अपने हर जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएंगे और वृक्षों की रक्षा भी करेंगे।

(मंच पर पर्दा गिरता है।)

• नवी मुंबई (महा.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

नदी

कविता : अदिति पटेल

सदा बहती रहती हूँ मैं
कभी नहीं रुकती।
कभी नहीं सूखती
कभी नहीं थकती

तुम्हारी तरह आलसी नहीं हूँ न।

अपनी कठोरता व तेज बहाव से,
तिकोने पत्थर को गोल-मटोल कर देती हूँ।

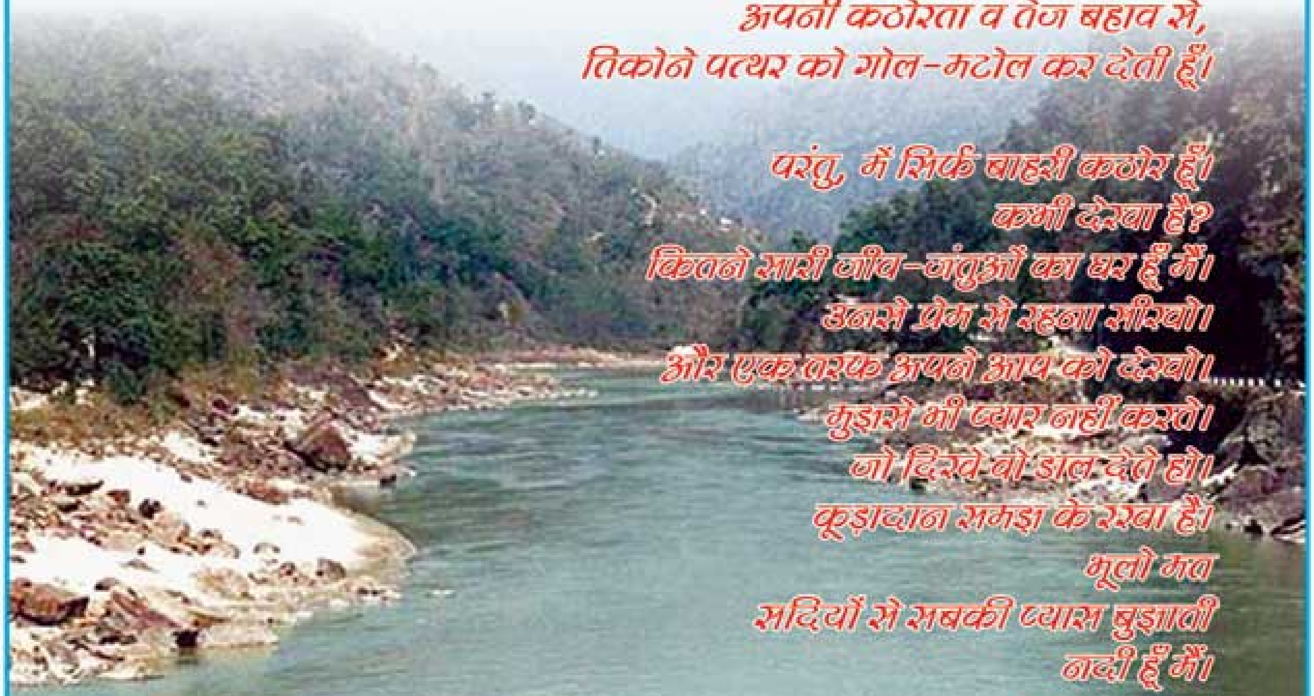

परंतु, मैं सिर्फ बाहरी कठोर हूँ।
कभी देखा है?
कितने सारी जीव-जंतुओं का घर हूँ मैं।
उनसे प्रेम से रहना सीखो।
और एक तरफ अपने आप को देखो।
तुझसे भी प्यार नहीं करते।
जो दिखे वो डाल देते हो।
कूड़ादान समझ के रखा है।
भूलो मत
सदियों से सबकी प्यास बुझाती
नदी हूँ मैं।

• इन्दौर (म.प्र.)

बातें हैं बड़ी-बड़ी
चित्रकथा : देवांशु वत्स
राम माँ का मोबाइल लिए हुए था।
गर्मी बहुत है, पक्षियों के लिए पानी जरुर रखें। अरे वाह! यह तो बहुत अच्छा संदेश है।
चीं चीं
यह संदेश मैं सभी को भेज देता हूँ!
चीं चीं
तभी माँ कमरे में आई...
माँ, गीता काकी वाला वो पानी वाला संदेश मैंने सभी को भेज दिया!
अच्छा किया!
अच्छे संदेश सबको भेजने चाहिए!
चीं ची
तभी चिड़िया बोली...
राम, सिर्फ संदेश ही भेजते रहोगे! मुझे तो गीता काकी के यहाँ भी पानी नहीं मिला!
अचानक राम की नींद टूट गई।
ओह! यह तो सपना था! मैं कब सो गया, पता ही नहीं चला!
चिड़िया अब भी बाहर चीं-चीं कर रही थी।
मैं रोज पक्षियों के लिए पानी रखूंगा!
चीं ची

मैं पीपल का पेड़ हूँ!

ललित निबंध: डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

मैं पीपल का पेड़ हूँ, स्वच्छ हवा का सरसराता हुआ झरना। जैसे पर्वतीय प्रदेश से कोई जल स्रोत झरना बनकर बह निकलता है उसी तरह मैं भी आक्सीजन बांटता रहता हूँ। मेरा जन्म एक नन्हें से बीज से हुआ है। हवा का एक प्यारा सा झोंका मुझे यहाँ इस भूमि पर स्थापित कर गया है। कई युग व्यतीत हो गये। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने मुझे अपना स्वरूप (विभूति) बनाया है। मुझे भगवान बुद्ध ने भी कृतार्थ किया है। वे मेरी छाया में बैठे तपस्या में लीन थे। अचानक वे कुछ कृशकाय तो थे ही एकदम अधिक दुर्बल हो गये। संयोग की बात। उसी समय सुजाता नाम की एक नारी पूजा का थाल लेकर आई तो

उसने अपनी खीर का नैवेद्य बुद्ध को अर्पण कर दिया। वह एक विशिष्ट मुहूर्त था। बुद्ध जो कि कृशकाय और जर्जर हो गये थे पुनः ऊर्जा को प्राप्त हो गए। मेरी सूखी शाखाओं जैसी उनकी भुजायें और उतने ही दुर्बल उनके सभी अंग सुजाता की खीर खाकर पुनर्जीवित हो गये। तब से मैं अपने ऊपर गर्व करने लगा। अब मैं बोधिवृक्ष कहलाया। मैं दिव्य हो गया। तभी से मुझे चट्टानों पर उकेरा गया। स्तूपों में ढाला गया नया तथा चित्रकारों ने भी अजन्ता की गुफाओं पर मुझे चित्रित कर। एक नई सार्थकता प्रदान की। मैं जहाँ भी दिखाई देता बौद्धभक्त मुझे काटते नहीं थे और न कभी किसी अन्य व्यक्ति को ही कुल्हाड़ी से मुझ पर प्रहार करने देते। मैं स्वच्छ हवा का झरना तो था ही अब पूज्य भी हो गया। मुझे काटने से व्यक्ति का ही नहीं वरन मानवता का कल्याण नहीं हो सकता। शायद इसलिए सत्पुरुषों ने मुझे काटे जाने का निषेध किया था। इतना ही नहीं उन्होंने मुझे बचाने के लिए मेरे ऊपर भूतप्रेतों का डर भी दिखा दिया था। आम आदमी तो इसलिए मुझसे दूर ही रहते हैं। भूल से काट देने पर उनका अकल्याण भी हो सकता है अतः मैं सुरक्षित खड़ा हुआ अपने पत्तों की ताली बजाया करता हूँ। वास्तव में इस युग में आदमी के अन्दर मेरे लिए न तो पूज्य भाव रहा है और न ही नष्ट कर देने पर किसी प्रकार का भय उसको सताता है। अब तो उपयोगिता की पूजा होती है। अब तो लोग जलाने के अतिरिक्त मेरी और कोई उपयोगिता ही नहीं समझते। कुर्सी मेज आदि उपकरण बनाने के लिए उन्हें मजबूत लकड़ी चाहिए वह मुझसे मिल ही जाती है।

मेरे ऊपर असंख्य चिड़ियों का बसेरा होता है। सबेरे सबके उठने से पहले वे मेरी टहनियों को अपनी चहचहाहट से गुंजायमान करती हैं। दिन भर उड़ती रहती है सांझ होते ही मेरी हरी भरी डालों पर बसेरा कर लेती हैं। सुख की नींद सो जाती हैं। मैं उनके लिए लोरियाँ गाता हूँ। सूरज की पहली किरन मेरी फुनगियों पर उतारता है तभी मैं धूप को धीरे-धीरे नीचे उतारता हूँ। किरणों के इस खेल पर मैं झूमझूम जाता हूँ। मैं किरणों को अपने सिर पर धारण करता हूँ। किरणें नीचे उतर कर नन्हें मुन्नों को मधुर प्रभावी गान सुनाती है तभी वे हड़बड़ा कर जाग जाते हैं और सुनो, घनी धूप में भी यात्रियों को अपनी शीतल छाया देता हूँ। अपने पत्तों से थके मांदे पथिक को छाया में लेकर विश्राम देता हूँ। बच्चे दोपहर में भी धमाचौकड़ी मचाते हैं। पशु-पक्षी ऊँघते रहते हैं तथा मजदूर विश्राम करते करते बतियाने लगते हैं।

मैं पीपल हूँ। अपने नाम को सार्थक करने वाला खण्डहरों में टूटी दीवालों की दरारों मैं तथा छतों की मुड़ेरों पर कहीं भी उग आता हूँ। कोई बोये या न बोये। कोई पानी दे या न दे मैं ठाठ से उठकर खड़ा हो जाता हूँ। मैं हर समय स्वच्छ हवा के पंखे सा झूला करता हूँ। आओ बच्चो! तुम्हें अपनी कहानी सुनाऊँगा। मुझसे प्राणवायु प्राप्त करो। काटो मत। काटने भी मत दो। लाभ तुम्हारा ही है मेरा क्या? मेरा शरीर तो परोपकार के लिए ही बना है।

• नोएडा (उ.प्र.)

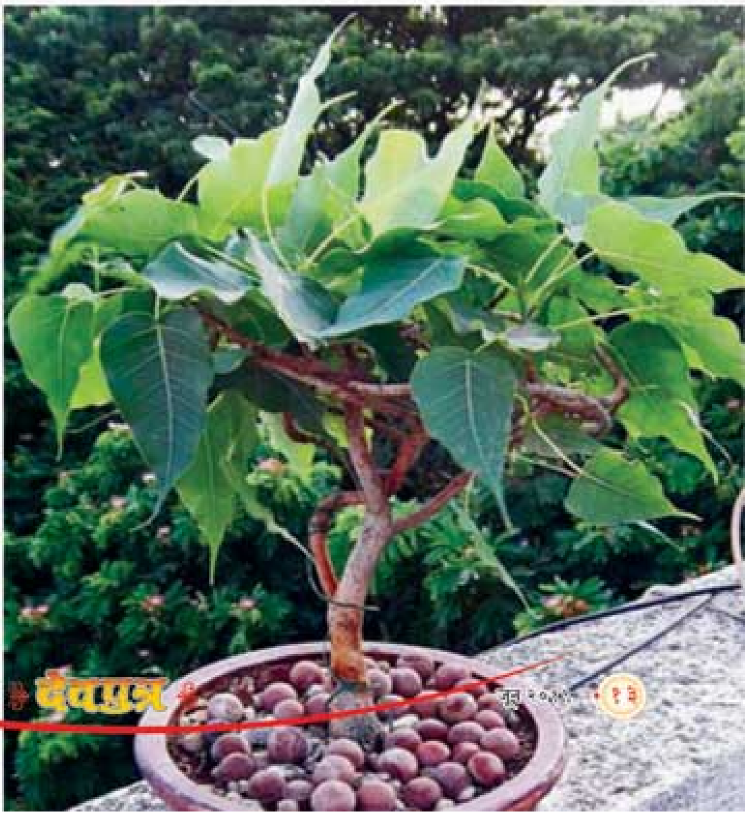

स्वच्छता

कहानी : पवन कुमार वर्मा

प्रणय विद्यालय जाने के पहले की तैयारी में लगा था। कल कक्षा में अध्यापक ने बच्चों को विस्तार से सफाई के महत्व के बारे में बताया था। प्रणय को उनकी बातों ने बहुत प्रभावित किया। वह सफाई के प्रति बहुत लापरवाह था। घर में भी उसके सामान, विद्यालय के कपड़े, किताब–कापियाँ, जूते सब इधर–उधर बिखरे रहते थे। माँ उसे बहुत समझाती, लेकिन उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।

कल विद्यालय में अपने अध्यापक की बात सुनकर उसे सफाई का महत्व समझ आ गया था। आज विद्यालय जाने से पहले उसने अपने बिखरे किताब–कापियों को ठीक प्रकार से रखा। स्नान के पहले ही जूतों को साफ कर लिया। भली–भांति स्नान किया। माँ तो रोज उसके विद्यालय से लौटते ही उसके विद्यालय के कपड़ों को धो दिया करती हैं। उसने साफ–सुथरे कपड़े पहने। साफ चमकदार जूते पहने।

''क्या बात है बेटा? आज सफाई पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है?'' माँ ने उसके गालों को चिकोटते हुए पूछा।

''हाँ माँ!... कल हमारे कक्षा के अध्यापक ने हमें सफाई के महत्व के बारे में बताया। माँ उन्होंने यह भी बताया कि सफाई न रखने से अनेक तरह के रोगों का खतरा बना रहता है।'' उसने गंभीरता पूर्वक अपनी माँ को बताया।

''वे बिल्कुल ठीक कह रहे थे। हम जहाँ रहते हैं, उस जगह के साथ–साथ आसपास की जगह भी साफ–सुथरी रखनी चाहिए।'' माँ ने विस्तार से उसे बताया।

''प्रणय चलो।'' बाहर से प्रत्यक्ष ने उसे विद्यालय चलने के लिए पुकार लगाई।

''अच्छा माँ! मैं विद्यालय जाता हूँ।'' प्रणय ने अपना बस्ता कंधे पर लटका लिया था।

''ठीक है बेटा! संभल के जाना।'' माँ ने उसे घर के बाहर तक छोड़ दिया।

दोनों मित्रों ने हाथ पकड़े और विद्यालय की ओर चल पड़े। प्रणय ने देखा प्रत्यक्ष के जूते साफ नहीं थे।

''तुमने आज अपने जूते साफ नहीं किये?'' प्रणय ने उसे टोका।

''क्या लाभ है भाई? रास्तों की धूल गंदगी से फिर से गंदे हो जाते हैं। मैं तो सप्ताह में एक दिन ही इनकी सफाई करता हूँ।'' प्रत्यक्ष हँसते हुए बोला।

''तो ठीक है। नहाना और खाना भी एक दिन ही कर लिया करो।''

उसकी बात सुनकर प्रणय रुष्ट हो गया था।

''चल नाराज मत हो। कल से जूते साफ करके ही पहनूंगा।'' प्रत्यक्ष ने उससे कहा।

विद्यालय पास आ गया था। विद्यालय के मुख्य द्वार पर ही पूरे वर्ष पानी जमा रहता था। जिससे विद्यालय आने–जाने वालों को बहुत सी परेशानियों का सामाना करना पड़ता था।

वह स्थान सड़क से थोड़ा नीचे था। इस कारण वहाँ पानी भर जाना आम बात थी। दोनों मित्र बच–बचकर चलने का प्रयास कर रहे थे। ...अचानक प्रणय थोड़ा लड़खड़ाया और उसका पैर पानी में चला गया। ...दोनों जूते गंदे हो गये। यह देखकर प्रत्यक्ष खिलखिलाकर हँस पड़ा। प्रणय को बहुत क्रोध आया। ...किसी तरह वह वहाँ से निकला। सभी उस पर हँस रहे थे। ...कक्षा में पहुँच कर उसने अपने दोनों जूते निकाले और उन्हें फिर से साफ किया।

आज उसका मन पढ़ाई में बिलकुल भी नहीं लग रहा था। मुख्य द्वार पर लगने वाली पानी के बारे में ही वह सोच रहा था। उसके मन में एक विचार आया।

विद्यालय की छुट्टी के ठीक पहले खेल के अध्यापक बच्चों को मैदान में ले जाते हैं। आधे घण्टे

बच्चे मैदान में अपनी पसंद के खेल खेलते हैं। प्रणय आज इसी समय का प्रयोग करना चाहता था।

खेल की घण्टी बजते ही सभी बच्चे मैदान की ओर दौड़ पड़े। प्रणय उन सबके पीछे था। वह खेल के अध्यापक से बात करना चाहता था। उसे अध्यापक अपनी ओर आते दिखे।

''चलो–चलो प्रणय। मैदान की ओर चलो।'' अध्यापक ने उससे कहा।

''जी! आज जब मैं विद्यालय आ रहा था तो मुख्य द्वार पर लगे पानी में गिरते–गिरते बचा। ऐसा रोज ही किसी न किसी के साथ होता हैं। मैं यह चाहता हूँ कि आज खेलने की जगह खेल के मैदान में पड़ी मिट्टी और कंकड़ के टुकड़े हम सभी मित्र मिलकर मुख्यद्वार पर डाल दें। जिससे वह स्थान ऊपर हो जाएगा और वहाँ पानी इकट्ठा नहीं हो सकेगा।'' प्रणय ने अपनी बात पूरी कर दी।

उसकी बात सुनकर अध्यापक गहरी सोच में पड़ गये। प्रणय सही सोच रहा था।

''लेकिन यह कार्य तो कोई मजदूर या विद्यालय की सफाई करने वाला भी कर सकता है। तुम सब क्यों...!'' अध्यापक थोड़े गंभीर हो गये थे।

''अपने आस–पास सफाई रखना किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं होता। इसे सबको मिलकर करना

चाहिए। इसलिए इसका प्रारम्भ हम अपने हाथों से करना चाहते हैं।'' प्रणय ने उन्हें समझाया।

उसकी बातें सुनकर खेल के अध्यापक बहुत प्रसन्न हुए। वे भी इसमें बच्चों का साथ देना चाहते थे।

फिर क्या था...। बच्चे इस कार्य में लग गये। बोरियों की छोटी–छोटी थैलियाँ बनाई गई। बच्चे उन थैलियों में मिट्टी और कंकड़ के टुकड़े भर–भर कर लाने लगे।... कुछ ही देर में उस स्थान को बच्चों ने अपने श्रम से साफ सुथरा कर दिया।

अगले दिन प्रार्थना सभा में प्रधानाचार्य ने प्रणय की खूब प्रशंसा की।

उन्होंने बताया– ''हमें अपने आस–पास सफाई रखने के लिए किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। इसे सबको मिलजुल कर करना होगा। यह तो हम सब की जिम्मेदारी है। विद्यालय के अन्दर भी कागज, पेन्सिल, रबर के टुकड़े इधर–उधर फेंकने की जगह उसे कचरे की टोकरी में डालना चाहिए। अपने कपड़े, किताब–कापियाँ, जूतों के साथ–साथ घर को भी साफ–सुथरा रखना चाहिए। ...आज प्रणय ने हम सबको एक सीख दी है। हमें इसे अपने व्यवहार में लाना चाहिए। आज से हम यह सब करने का प्रण लें।''

सब ने प्रार्थना सभा में प्रतिज्ञा की कि वे स्वयं के साथ–साथ अपने आस–पास को भी साफ सुथरा रखेंगे। प्रणय भी मन ही मन बहुत प्रसन्न था।

• गाजीपुर (उ.प्र.)

दीनदयाल शर्मा व डॉ. दिनेश पाठक सहित

९ बाल साहित्यकारों का सम्मान

भोपाल। राजकुमार जैन राजन फाउंडेशन, आकोला (राज.) के सौजन्य से 'बाल कल्याण एवं बाल साहित्य केन्द्र' भोपाल के वार्षिक आयोजन में हनुमानगढ़ (राज.) के श्री दीनदयाल शर्मा को डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति बाल साहित्य सम्मान २०१९ एवं मथुरा के डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' को ''डॉ. श्रीप्रसाद स्मृति बाल साहित्य सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, शॉल एवं सम्मान राशि प्रत्येक रू. पाँच हजार मंचस्थ अतिथियों के करकमलों द्वारा भेंट की गई। अब तक फांउडेशन के सौजन्य से श्रीपंचशील जैन, डॉ. उषा यादव, श्री गोविन्द शर्मा, श्री घमण्डीलाल अग्रवाल, डॉ. हुंदराज बलवाणी, डॉ. अखिलेश श्रीवास्तव चमन आदि को समादृत किया जा चुका है।

इस अवसर पर श्री आर.के. पालीवाल, डॉ. राघवेंद्र शर्मा, डॉ. उमाशंकर नगायच एवं हरीश खंडेलवाल मंचस्थ अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे।

बाल कल्याण एवं बाल साहित्य केन्द्र भोपाल द्वारा उत्कृष्ठ बाल साहित्य सृजन के लिए डॉ. रमेश चन्द्र खरे (दमोह), करुणा श्री (जयपुर), महेन्द्र जैन (हिसार), इंजी. आशा शर्मा (बीकानेर), डॉ. शील कौशिक (सिरसा), कांति शुक्ला (भोपाल) सहित गुजराती बाल साहित्यकार महेश स्पर्श (थासरा) को भी स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, शाल व प्रत्येक को एक–एक हजार रु. की नगद राशि के साथ समादृत किया गया।

इस अवसर पर बच्चों की मनमोहक प्रस्तुतियों के साथ ही बाल साहित्य की कृतियों का लोकार्पण भी हुआ। स्वागत उद्बोधन आशा शर्मा ने दिया तो कार्यक्रम का कुशल संचालन शशि श्रीवास्तव ने किया। आभार संस्थान के निदेशक महेश सक्सेना ने किया।

॥ रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस : १८ जून ॥

वीरांगना लक्ष्मीबाई

कविता : गोपाल कौशल

अश्व पर बैठी मर्दानी
हाथों में लेकर कृपाल।
पवन वेग-सी गति से चल दी
बन अंग्रेज शत्रु का काल॥

कण-कण में भर ज्वाला
रण में बनी थी वह चंडी।
इसकी देखकर वीरता
नतमस्तक हुए घमंडी॥

नाना के संग सीखे थे गुर
युद्ध में लडी अकेली।
बरछी, तीर कृपाण, कटारी
उसकी सखी सहेली॥

बांध पीठ पर नौनिहाल को
जोश भरी मर्दानी थी।
आँखों में भर रक्त शत्रु
संहार की उसने ठानी थी॥

जिसकी गाथा गूंज रही है
अब भी रण मैदानों में।
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई
सिंहनी बन मर्दानों में॥

लिए देश की आन-बान
चण्डी बनी लड़ी थी।
स्वयं वीरता देहधारिणी
होकर यथा खड़ी थी॥

वह पहले स्वतंत्रता के संग्राम
की वीर कहानी थी।
थर्राए अंग्रेज थे उससे
वह झाँसी की रानी थी॥

• नागदा (म.प्र.)

सिंहराज करे सफाई

कहानी मूल गुजराती : सांकलचंद पटेल
अनुवाद : शिवचरण मंत्री

गीदड़ और शेर दोनों ही पड़ोसी थे। दोनों के आँगन पास पास में थे। दोनों के बच्चे पास पास में घर होने से एक साथ ही खेलते थे। गीदड़ का आँगन साफ रहता था और शेर का आँगन गंदा रहता था। सिंह के आगन में झूठा पड़ा रहता था। सिंह कई बार इस गंदगी को गीदड़ के आँगन में डाल देता था, इस कीचड़ से गीदड़ के बच्चों का सिर पीड़ा से फटा फटा रहता था और उसके बच्चे बीमार रहते थे।

एक दिन गीदड़ ने शेर को जाकर कहा– ''राजा जी, राजा जी, एक निवेदन करने आया हूँ।''

सिंह ने कहा – ''हाँ कहो!''

गीदड़ ने कहा– ''आप अपने घर का सारा झूठन मेरे आँगन में डाल देते हो, इससे मेरे बच्चे बीमार रहते है। अतः आप इस झूठन को झूठन पात्र में डाल दे तो ठीक रहेगा।''

गीदड़ शेर को सलाह दे रहा है तो शेर ने उसे कहा, गीदड़! क्या तू मुझे नहीं देख रहा है, मैं कौन हूँ? मैं हूँ इस वन का राजा, मैं हूँ सब प्राणियों का राजा महाराजा, मेरी एक ही आवाज से सारा जंगल काँप उठता है, सारे पशु पक्षी काँप उठते हैं। तू है तुच्छ प्राणी, तू हैं तुच्छ जीव... कचरा तेरे ही आँगन में डलेगा, जा तेरे से जो कुछ हो कर लेना। जा, यहाँ से भाग जा। नहीं तो तेरा कचरा कर दूँगा।''

गीदड़ कमजोर था, घबराता जरूर था पर साहसी था। दूसरे दिन सिंह के आँगन में आकर कहा ''बड़े अधिकारी के पास जाऊँगा, तेरी शिकायत करूंगा, तुझे हथकड़ियाँ पहनाऊँगा, तुझे जेल में डलवाऊँगा।''

गीदड़ की धमकी सुनकर शेर लाल पीला हो गया और कहा।

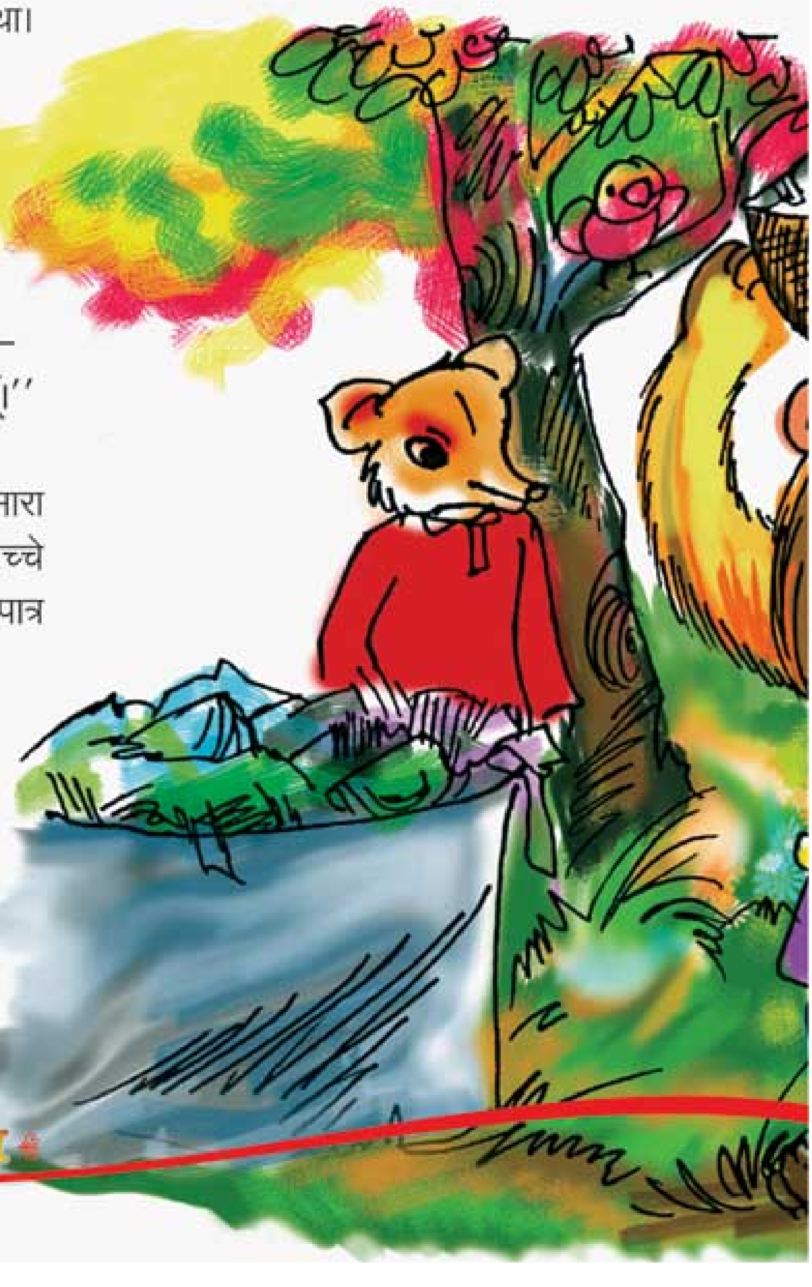

''अरे...अरे ठहर! जहाँ भी जाना है वहाँ जा, तेरे से जो बने कर लेना, वे सब मेरे तो पालतू बंदर है।''

सप्ताह भर बीत गया। सिंह अभी भी आँगन में झूठन डालता रहा। स्वच्छता विभाग की ओर से कोई कार्यवाही नहीं होने से दूसरे दिन सिंह के आँगन में आकर उसने कहा–''अब मैं जमादार के पास जाऊँगा और कहूँगा।

''जमादार के पास जाऊँगा, बड़े अधिकारी से शिकायत करूँगा, तुझे हथकड़ियाँ पहनाऊँगा, तुझे जेल की हवा खिलाऊँगा।'' सिंह ने अपनी मूँछ पर हाथ रखकर कहा।

''अरे टेणका! तुझसे जो बने सब कर ले। सारे अधिकारी मुझे जानते है, वे सारे मेरे तोते हैं।''

दूसरा सप्ताह बीत गया। सिंह अब भी सियार के झूठन में झूठा डाल रहा था। स्वच्छता विभाग में अभी कोई कार्यवाही नहीं हुई थी। दूसरे दिन सिंह के आँगन में आकर गीदड़ ने कहा–''अब मैं सूबेदार के पास जाऊँगा।''

गीदड़ की बात से शेर को गुस्सा आ गया। उसने गुर्रा कर गीदड़ को कहा।

''अरे बच्चे! तुझे जहाँ भी जाना हो जा, तुझसे जो भी हो कर लेना। सारे अधिकारी मेरे परिचित हैं, वे सब मेरे पालतू जानवर हैं।''

दूसरा सप्ताह भी बीत गया। शेर अब भी गीदड़ के घर में झूठन डालता ही रहा। सफाई विभाग की ओर से अब भी कोई कार्यवाही नहीं हुई थी। दूसरे ही दिन गीदड़ सफाई के सबसे बड़े अधिकारी के पास जाकर निवेदन किया।

''महोदय, सारा जंगल गंदा है, घर घर बीमारी है, सफाई वाला गहरी नींद में है, सारे जंगल में परेशानी का राज्य है।

प्रधान जी तुरंत जानकारी करवाई। गीदड़ की फरियाद सही थी। सारे सफाई कर्मचारियों के स्थान पर नई नियुक्तियाँ की गई। उनको सारे जंगल को सफाई की जिम्मेदारी सौंपी गई।

''बच्चो! देखिए उस सिंह के सिर पर कचरे की टोकरी।'' वह कचरे को पेटी को उठाकर कचरे के ढेर में डाल रहा था।

• अजमेर (राज.)

आविष्कार

चित्रकथा - नरेन्द्र ठाकुर

धरा घबराती है

कविता : राजेन्द्र निशेश

कटते जंगल देख अब धरा घबराती है,
प्राकृतिक आफतें आ हमको सताती हैं।

जंगल धरती के हरे फेफड़े कहलाते
ऑक्सीजन और पानी दोनों को बढ़ाते,
बादलों की आँख के होते ये हैं तारे
भूमि- क्षरण को रोकें, शुद्ध हवा हम पाते।

बढ़ते प्रदूषण से तो आँख भर आती है,
कटते जंगल देख अब धरा घबराती है।

जड़ी-बूटियाँ अनेक अपने में उपजाते
शरण-स्थली जंगली प्राणियों की कहलाते,
अनगिनत लाभ वनों से हम सभी हैं पाते
जैव विविधताओं के पोषक माने जाते।

खतरे की घंटी बार-बार समझाती है
कटते जंगल देख अब धरा घबराती है।

अपनी मातृ-भूमि से स्नेह जो हैं करते
पेड़-पौधे लगाकर धरा का शाप हरते,
भोजन और आवास इन्हीं से हम पाते
सूझवान लोग कुछ वन्दना इनकी करते।

करनी, वैसी भरनी, बात याद आती है,
कटते जंगल देख अब धरा घबराती है।

• चण्डीगढ़

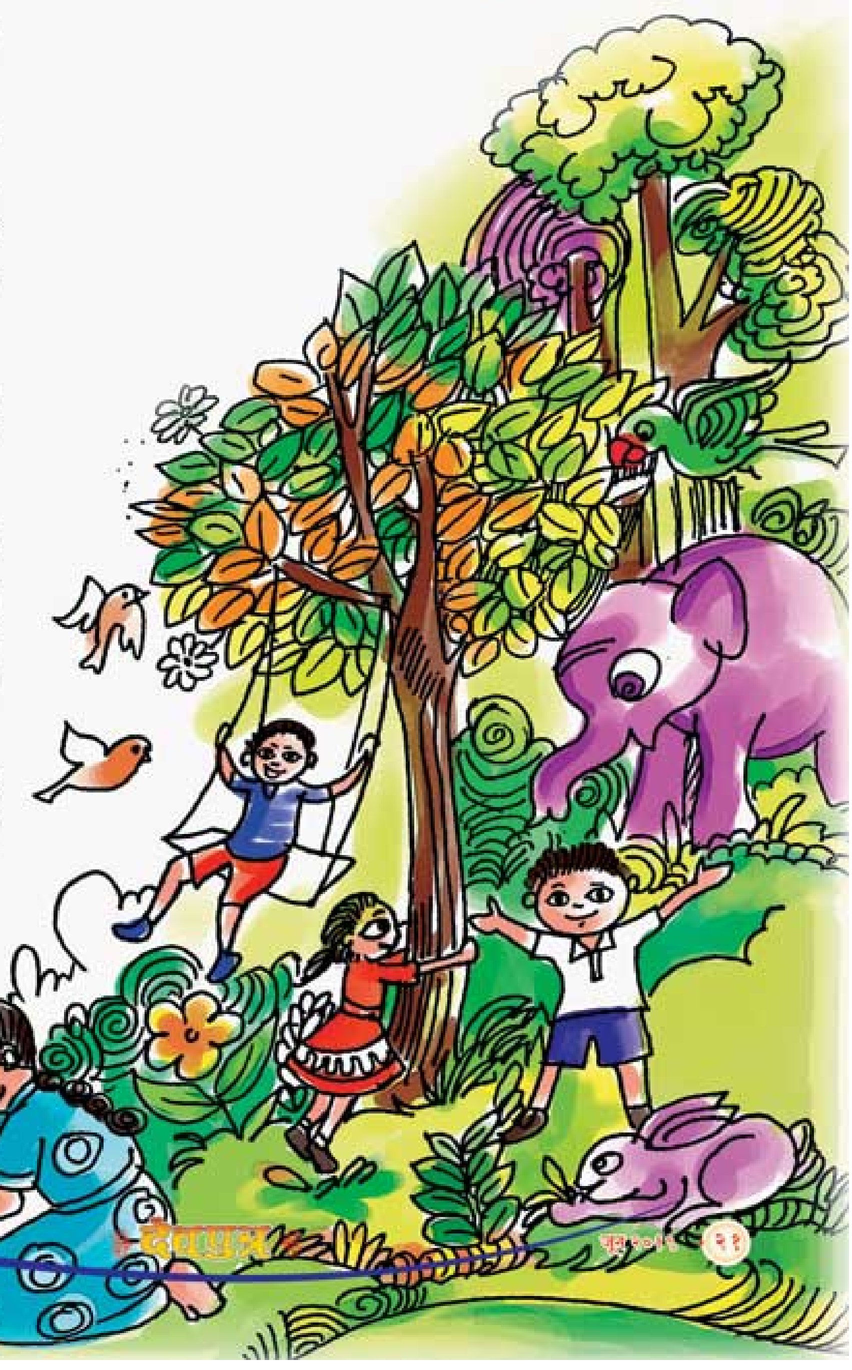

बुहारी

''ना बेटे, ना–ऊधम न कर–'' कहकर छत्रपति ने अपने घोड़े को पुचकारा।

लेकिन वह मनस्वी घोड़ा आज विक्षिप्त सा हो उठा है। उसका हृदय न जाने किस आगत आशंका की अनुभूति पाकर क्षुब्ध है। महाराज ने उसे राह पर लाने का बहुतेरा प्रयास किया, लेकिन वह नहीं माना। घोड़े की बैचेनी को वे समझने का प्रयास कर रहे थे। आज इस समझदार घोड़े को न जाने क्या हो गया है। वह उन्हें अकेले ही बियाबान जंगल की राह लिये दौड़ता जा रहा है।

अंगरक्षक बहुत पीछे छूट गए हैं।

अन्ततः अब घोड़ा शांत हुआ। महाराज एक राह पर एकाकी बढ़ते जा रहे हैं। अब वे सही रास्ते पर पहुँच गए हैं। मन की गति के साथ उड़ने वाला घोड़ा आखिर गलत राह पर कैसे ले जा सकता है। प्रत्यक्ष उच्छृंखलता के बावजूद महाराज ने उस पर चाबुक नहीं मारा है। वे चकित अवश्य है कि घोड़ा आज अनुशासन से बाहर कैसे हो गया। खैर, अंगरक्षकों का तो कहीं पता नहीं, लेकिन शायद सेना उस रास्ते से ही गयी है।

शिवाजी महाराज उसी राह आगे बढ़ रहे हैं। शाम होने वाली है। दिनभर बिना खाये–पीये, थके मांदे वे स्वयं और उनका घोड़ा भी अब किसी आश्रय की खोज कर रहे हैं।

सामने एक गाँव दिखाई दे रहा है।

लेकिन यह क्या? यह घर तो सूना पड़ा है कोई है नहीं, तो भी द्वार खुला पड़ा है। दूसरा, तीसरा, चौथा और गाँव के सभी घर जनशून्य। जहाँ–तहाँ सामान बिखरा हुआ। महाराज का मन शंकित हो गया। ऐसा क्या मेरी सेना ने लूटपाट की है?

आगे एक और गाँव–वह भी निर्जन, लुटा–पिटा। शिवाजी का मन बैचेन हो उठा और आगे बढ़ते हैं। गाँव के बाहर एक टूटी–फूटी झोपड़ी पर पहुँच कर घोड़ा, अपने आप रुक गया।

एक सैनिक को आया देख एक बुढ़िया बाहर निकल आई है– ''क्या अभी लूटने को कुछ बच गया है?'' बुढ़िया के स्वर में तीखा तिरस्कार और क्षोभ गूँज रहा है।

महाराज घोड़े से उतर कर बुढ़िया को हाथ जोड़कर प्रणाम करते है। बुढ़िया का स्वर कुछ नम्र पड़ता है, आशीर्वाद देती है। पूछती है– 'कौन हो? कहाँ से आ रहे हो?''

'माँ! तीर्थ दर्शन से लौट रहा हूँ। रात भर के लिए आश्रय चाहता हूँ।''

बुढ़िया के मन का मैल छंट गया, फिर भी आक्रोश बाकी है, कहती है– ''शिवाजी की बड़ी प्रशंसा

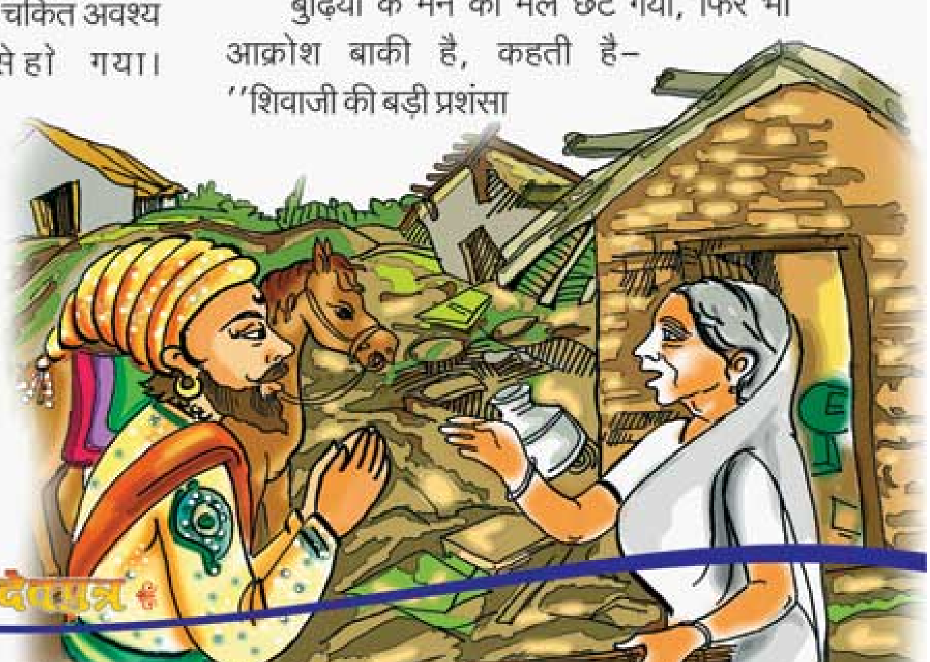

सुनी थी। लेकिन आज तो उसकी सेना ने जैसी लूटपाट की, उससे मन खट्टा हो गया है। बेटे! बुरा न मानना। आओ, बैठो।'

छत्रपति जीन उतार कर घोड़े को पास ही उगी दूब में छोड़ देते हैं। स्वयं विश्राम के लिए बैठ जाते हैं। अब उन्हें समझ में आया कि घोड़ा क्यों क्षुब्ध था। वह इस स्थान पर सैनिकों की लूटपाट की घटना को मन चक्षु से देखकर ही जल्दी से जल्दी महाराज को यहाँ पहुँचाने के लिए उतावला हो उठा था। वह सैनिकों की अनुशासनहीनता से क्षुब्ध था। महाराज घोड़े की इस मन की बात जान लेने की वृत्ति से परिचित थे। मन की गति से चलने के उसके इस गुण का उन्हें आज पहली बार ही अनुभव नहीं हुआ था।

छत्रपति देश के दक्षिण छोर में स्थित कन्या कुमारी तक धावा मार कर लौटे थे। रास्ते में विचार आया कि इधर के तीर्थों का भी दर्शन करते चलें। सेना को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और सदा की तरह निर्देश दिया– ''जनता को किसी भी तरह की असुविधा न हो।''

सेना गोआ की ओर बढ़ी और अपने थोड़े से अंगरक्षकों के साथ शिवाजी उडुपी, श्रृंगेरी, गोकर्ण से मजाली की ओर जाते समय घोड़ा बिगड़ गया।

*****

''माँ क्या कुछ खाने को है?'' शिवाजी ने बुढ़िया से कहा।

''देखती हूँ, उन लुटेरों ने कुछ छोड़ा भी है, या नहीं।'' बुढ़िया झोपड़ी के भीतर गयी और थोड़ा सा चावल लेकर लौटी। उसने उसे पकाया और अतिथि को प्रेम से परोसा।

महाराज को बड़ी तृप्ति मिली। थका शरीर, रात सुख से सोए।

प्रातः बुढ़िया को धन्यवाद देकर और प्रणाम कर आगे की यात्रा पर गोआ की ओर चल दिये।

*****

दो चार दिन ही बीते थे, बुढ़िया को दो मराठा सैनिक झोपड़ी की ओर आते दिखाई पड़े। बुढ़िया की भौहें तन गयीं। तीखी आवाज में वैसे ही बोली– ''क्या अभी लूटने के लिए कुछ बाकी बचा है?''

सैनिक के सिर लज्जा से झुके हुए थे। सैनिक घोड़े से उतरे और प्रणाम किया। फिर उनमें से एक बोला– ''माँ, जो कुछ हम लोगों ने किया, वह छत्रपति के आदेश के विरुद्ध था। हम अपनी सेना की ओर से आप और गाँव वालों से क्षमा मांगने आये हैं।''

बुढ़िया शान्त खड़ी रहीं। सैनिकों ने सोने के दो जगमगाते कड़े उसके चरणों में निवेदित किये– ''महाराज शिवाजी ने इन्हें देकर हमें आपके पास भेजा है।''

वृद्धा की आँखें चमत्कृत हो उठीं। दूसरा सैनिक बोला– ''महाराज ने आपके यहाँ जो भोजन किया था, उसके लिए धन्यवाद कहा है।''

अब बुढ़िया विस्मय से बोल उठी– ''क्या उस भोजन की स्मृति के लिए आपसे कोई चिन्ह भी देने के लिए कहा है।''

''चिन्ह? और वह भी छत्रपति शिवाजी के लिए? मुझ गरीब के पास क्या है, जो उन्हें दूँ।''

बुढ़िया चिन्तामग्न हो गई। एकाएक उसकी आँखें अपने हाथों की ओर घूम गईं, वह बुहारी लिए थी, जिससे वह दरवाजे पर सफाई कर रही थी। वह सरल भाव से बोली–'' मेरे पास अब और कुछ तो बचा नहीं। यह बुहारी भर है।''

सैनिक ने घुटने टेक कर हाथ बढ़ा दिये और आदर से बुहारी ले ली। आखिर महाराज के आदेश का उन्हें पालन करना ही था।

छत्रपति बुढ़िया के द्वारा भेजी गई बुहारी को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा– ''प्रशासन को भ्रष्टाचार से बचाए रखने के लिए स्वच्छता हेतु यह बुहारी मेरे लिए सदैव कर्तव्य का स्मरण करायेगी। इसको चांदी की मूठ लगाकर रखा जाए और चाहे जहाँ मैं जाऊँ यह बुहारी सदैव मेरे साथ रखी जाए।

विज्ञान चित्रकथा

ओजोन परत की सुरक्षा

चित्रकथा-संकेत

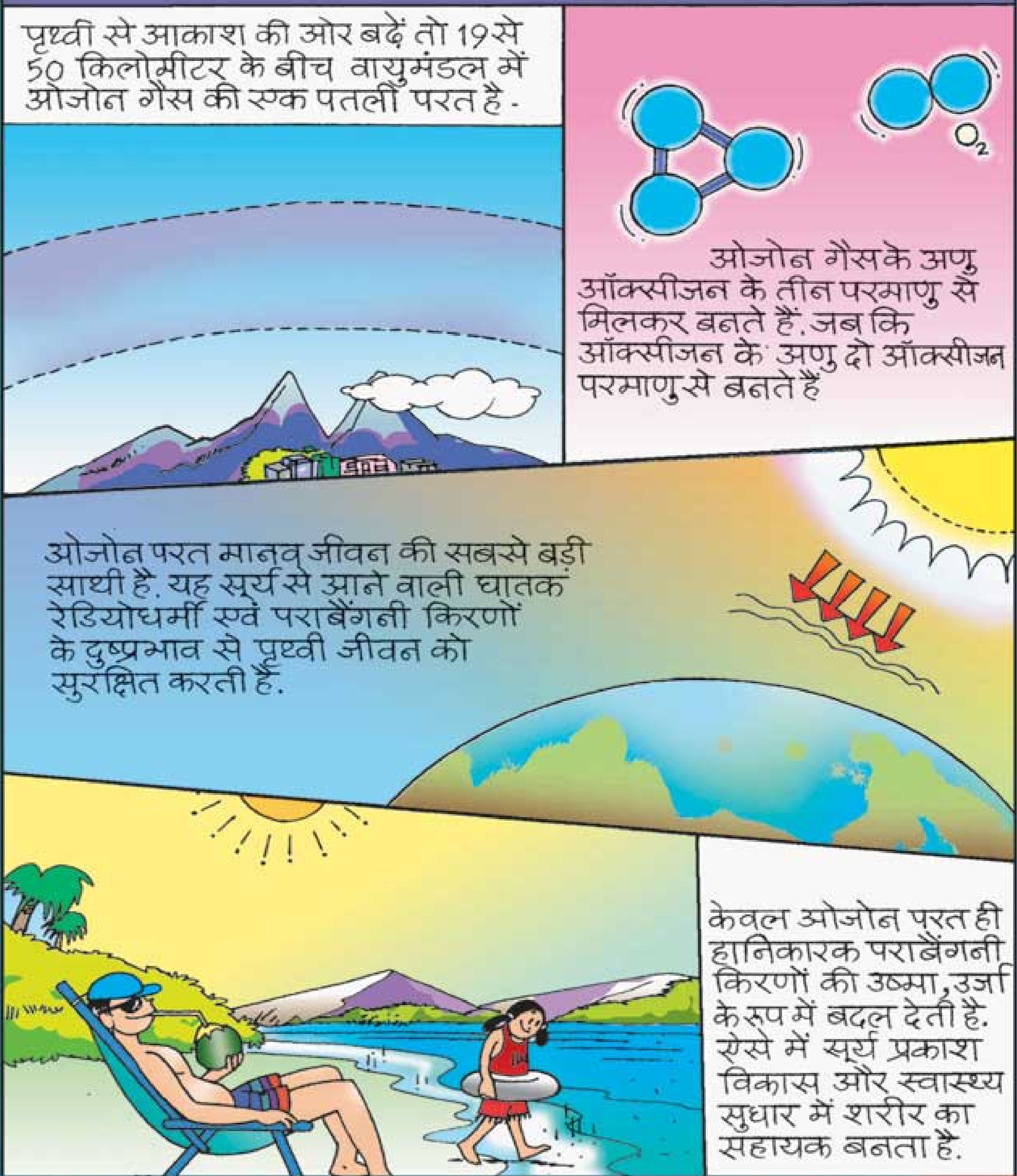

लेकिन इंसान कुछ ऐसे हानिकारक रसायनों का उपयोग करते हैं जो हवा में मिलकर ओज़ोन परत को नष्ट कर रहे हैं. ऐसे रसायनो को क्लोरोफ्लूरोकार्बन्स कहते हैं..
..यानी क्लोरीन, कार्बन और फ्लोरीन युक्त रसायन..
जो ओजोन परत के लिए परम शत्रु साबित हो रहे हैं.
ओज़ोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों में ज्यादातर दैनिक जिन्दगी में इस्तेमाल में लाए जाते हैं. मसलन स्प्रे, कैन, एयरकंडीशन, फ्रिज, फोम निर्माण और अग्निशमन यंत्रों में इस्तेमाल में आने वाले रसायन.
पृथ्वी के पर्यावरण में गर्मी बढ़ाने में क्लोरोफ्लूरोकार्बन्स, कार्बन-डाइ आक्साइड के मुकाबले 25 हजार गुणा अधिक काम करती है.

इसके लिए ग्रीन-हाऊस इफेक्ट को सरल रूप में समझना पड़ेगा
धरती पर वाहनों और कारखानों के धुएं में निकली कार्बन-डाइ आक्साइड वातावरण में अपनी परत बना लेती है. जब सूर्य की उष्मा पृथ्वी पर आती है तो पृथ्वी उष्मा को वापस भेजती है, परावर्तित करती है लेकिन कार्बन-डाइ आक्साइड की परत पूरी गर्मी बाहर नहीं जाने देती यही अम्लों के दुष्प्रभाव व वर्षा का कारण बनती है.
ओज़ोन परत न हो तो पराबैंगनी किरणें भी पृथ्वी पर पूरी विनाश-शक्ति के साथ प्रवेश तो करेंगी लेकिन वापस नहीं लौटेंगी.
ओज़ोन परत के कमजोर पड़ने का मतलब है सूर्य की घातक विकिरणों का पृथ्वी पर सीधे पहुंचना. ऐसे में लोगों में त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद और आंखों के रोगों सहित प्रतिरक्षा तंत्र हनन जैसे रोगों में वृद्धि होगी.
ये तो वाकई खतरनाक होगा.

ओज़ोन परत पतली हो रही है और अंटार्कटिका के ऊपरी हिस्से में इसमें छेद हो चुका है यह छेद उत्तरी अमेरिका जितना बड़ा है और माऊंट एवरेस्ट जितना गहरा.
एक बार पर्यावरण में प्रसारित क्लोरो फ्लूरो कार्बन 100 से 2300 वर्षों तक कायम रह सकते हैं.
तो बच्चों, आज अगर हम क्लोरोफ्लूरोकार्बन पैदा करने वाली चीजों के उत्पादन व उपयोग रोकें तो 50 से 100 वर्षों में हम ओजोन परत को पहुंचे नुकसान से मुक्त होंगे.
वरना जल्द ही बढ़ती गर्मी से ध्रुवों की बर्फ पिघलेगी, समुद्र तल ऊपर उठेगा और महाद्वीपों को डुबोडालेगा. हॉलैण्ड और मालद्वीप जैसे द्वीप तो बहुत जल्दी पानी में डूब जाएंगे...
SAVE ATMOSPHERE SAVE EARTH
ओजोन परत संरक्षण की दिशा में हुए समझौते पर विश्व के 173 देश हस्ताक्षर कर चुके हैं. 2020 तक क्लोरो फ्लूरोकार्बन्स पदार्थों के प्रयोग पर 99.5% रोक लगाने की उम्मीद है.
समाप्त

जादुई बर्तन

कहानी : डॉ. मंजरी शुक्ला

आज भी बीच की छुट्टी के समय बच्चे खाना खाने के बाद अपनी बोतलों का आधा पानी फेंककर विद्यालय के वाटर कूलर से पानी भर रहे थे तो बारह साल का राहुल पानी का दुरुपयोग देख कर बहुत दुखी हो रहा था।

प्रतिदिन मध्यावकाश में ऐसा ही होता था। बच्चों की बोतल का पानी दोपहर तक सुबह जितना ठंडा नहीं रहता था इसलिए वे बोतल का पानी वाटर कूलर के पास ही फेंककर ठंडा पानी भर लेते थे।

राहुल जिस मोहल्ले से आता था वहाँ पर पानी की हर दूसरे दिन किल्लत मची रहती थी और सब लोग पैसे मिलाकर पानी का टैंक मंगवाते थे और एक एक बाल्टी पानी के लिए लम्बी लाईन लगती थीं।

सबसे दुःख की बात ये थी कि टैंकर का पानी भी बहुत गंदा होता था, पर मजबूरीवश जैसे तैसे उसी पानी से काम चलाना पड़ता था इसलिए उसे छानकर और उसमें फिटकरी डालकर सभी लोग उस पानी को स्वच्छ कर अपने उपयोग में लाते थे।

राहुल ने कई बार अपने मित्रों को समझाने का प्रयास किया पर वे उसे कंजूस-कंजूस कहकर चिढ़ाने लगे।

एक दिन राहुल कक्षाध्यापक से जाकर बोला- ''श्रीमान जी! सभी छात्र अपनी बोतलों का पानी जमीन पर फेंक देते है जिससे पानी की बहुत बर्बादी होती है।''

कक्षाध्यापक जी ने उसकी बात को समझा और कहा- ''ठीक है, मैं कक्षा के बच्चों को समझाऊँगा।

उस दिन वर्मा जी ने पानी के महत्व के बारे में बच्चों को समझाया जिससे कुछ बच्चों ने पानी फेंकना बंद कर दिया पर कुछ लापरवाह बच्चों ने वर्मा जी की बातों की भी परवाह नहीं की।

वर्मा जी ने राहुल के कहने के बाद जब गौर करना शुरु किया तो उन्हें भी पानी की इतनी बर्बादी देखकर बहुत दुःख हुआ।

उन्होंने राहुल के साथ मिलकर बच्चों को सुधारने का एक और प्रयत्न करना चाहा।

राहुल ने वर्मा जी को एक सुझाव दिया जिससे वर्मा जी की आँखें खुशी से चमक उठी और उन्होंने राहुल को गले से लगा लिया।

दूसरे ही दिन प्राचार्य जी से कहकर वर्मा जी ने वाटर कूलर के पास एक काले रंग का बहुत बड़ा बर्तन रखवा दिया और बच्चों से पूछा- ''क्या तुम्हें लगता नहीं है कि ये बर्तन थोड़ा सा अजीब है?''

सभी बच्चों ने तुरंत उस काले रंग के बर्तन को देखा और उन्हें उसमें कई आकृतियाँ बनी दिखाई दी।

''अरे, इसमें तो सुनहरे रंग की एक परी बनी है''... एक बच्चा बोला।

''हाँ...इसमें तो चमकीले रंग की नीली नदी भी है'' दूसरा तपाक से आगे आकर बोला।

बस फिर क्या था...बच्चे मस्ती के मूड में आ गए और बहुत देर तक उस बर्तन के रंग, रूप और उस पर बनी आकृतियों के बारे में बताने लगे।

कोई बर्तन में मोर ढूंढ रहा था तो कोई उसमें से खूंखार शेर को देख अचरज कर रहा था।

थोड़ी देर बाद उसकी बात सुनने के बाद प्राचार्य जी बोले- ''अब मैं तुमको इस बर्तन की वह विशेषता बताता हूँ, जो तुममें से किसी को भी नहीं पता है।''

सभी बच्चों की आँखें उन के चेहरे पर टिक गई और थोड़ी देर पहले का कोलाहल बिलकुल शांत हो गया।

चारों और सन्नाटा हो गया था। बच्चे दम साधे प्राचार्य जी से बोलने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्राचार्य जी ने मुस्कुरा कर सभी बच्चों की ओर देखा और बोले- ''जिससे मैंने ये बर्तन खरीदा है, उसने मुझे बताया कि ये बर्तन जादुई है।''

''जादुई!'' सभी बच्चों के मुँह से एक साथ निकला।

''हाँ जादुई... इस बर्तन में कितना भी पानी डाला जाए, ये बर्तन कभी नहीं भरता।''

सभी बच्चे आश्चर्य से एक दूसरे का मुँह देखने लगे और आपस में खुसुर-पुसुर शुरु हो गई।

''शांत शांत'' प्राचार्य जी हँसते हुए बोले- ''अब कल से पूरा विद्यालय जादू के इस खेल को खेलेगा... जो पानी तुम लोग जमीन पर फेंकते हो वो इस बर्तन में डालना और देखना कि ये बर्तन कभी भरेगा ही नहीं...

''हाँ...हाँ हम आज से ऐसे ही करेंगे।''...कहते हुए सभी बच्चों के चेहरों पर मुस्कान नाच रही थी।

बस फिर क्या था सभी बच्चों के दिमाग में सिर्फ वह जादुई बर्तन नाच रहा था और सब अधीरता से मध्यावकाश का रास्ता देख रहे थे।

मध्यावकाश होते ही सबने जल्दी जल्दी अपना अपना भोजन समाप्त किया और भागे वाटर कूलर से अपनी-अपनी बोतलों में ठंडा पानी भरने के लिए।

पर आज तो जैसे चमत्कार हो गया था। जहाँ रोज पानी की नदी बन जाती थी और सबको शाम तक छप-छप करके चलना पड़ता था वहीं आज कोई सूक्ष्मदर्शी काँच से देखता तो भी एक पानी की एक बूँद भी जमीन पर दिखाई नहीं देती।

सभी बच्चे उस जादुई पात्र में अपनी बोतलों का पानी डाल रहे थे और कुछ शैतान बच्चे तो वाटर कूलर का पानी भी उस बर्तन में डाल रहे थे। पर सच में वो बर्तन जादुई था, क्योंकि इतना सारा पानी डालने के बाद भी बर्तन खाली ही था।

इसी तरह से कई दिन बीत गए और बच्चे वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी में व्यस्त हो गए पर पानी वे अब भी नियम से उस जादुई बर्तन में डालते और उसे कभी ना भरता देखकर दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते।

परीक्षाएँ शुरु होकर समाप्त भी हो गई और बच्चे उत्सुकता से परिणाम वाले दिन की प्रतीक्षा करने लगे।

जिस दिन परिणाम मिलना था उस दिन सभी बच्चों को उनके माता-पिता के साथ विद्यालय के पीछे खाली पड़े मैदान की ओर भेजा गया। सभी बच्चों के साथ साथ राहुल की कक्षा के बच्चे भी उस बंजर और सूखे मैदान की ओर जाने से बहुत गुस्सा हो रहे थे।

पर सिर्फ राहुल था जो वर्मा जी की तरफ देखकर मुस्कुरा रहा था।

जैसे ही विद्यालय के चौकीदार ने उस मैदान में जाने वाला विद्यालय के पीछे का दरवाजा खोला, उसकी आँखें आश्चर्य से फटी रह गई। सभी को ऐसा लग रहा था मानो वे स्वर्ग में आ गए हों।

जूही, मोगरा, गुलाब, चंपा, रजनीगंधा और अनेक रंगबिरंगे फूलों का संसार जैसे उस मैदान में उतर आया था। हरी, पीली, नीली, गुलाबी और भी न जाने कितने रंगों की तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल के ऊपर मंडरा रही थी। सुगन्धित फूलों को छूकर आती ठंडा हवा के झोंके, बच्चों और उनके माता पिता को इस प्राकृतिक सुंदरता से अभिभूत करा रहे थे। तभी वहाँ पर प्राचार्य जी आए और

बोले– ''इतनी सारी रंगबिरंगी तितलियाँ, हरे भरे पेड़, चहचहाती चिड़िया और हजारों सुन्दर सुन्दर फूल मेरे इन प्रिय छात्रों के कारण ही आज यहाँ पर अपनी सुंदरता बिखेर रहे हैं।''

बच्चों के मुँह से आश्चर्य से निकला– ''हमारे कारण?''

''हाँ याद है वो जादुई बर्तन वास्तव में तुम लोग पानी की बहुत बर्बादी करते थे और बार बार समझाने पर भी नहीं मानते थे इसलिए राहुल ने ही हमें एक सुझाव दिया और आज परिणाम तुम्हारे सामने है।''

ये सुनते ही सब लोगों ने राहुल की तरफ देखा जो एक ओर खड़ा मुस्कुरा रहा था।

सबकी आँखों में हैरत के भाव देखते हुए प्राचार्य जी मुस्कुराते हुए बोले– ''दरअसल वह बर्तन जादुई नहीं था बल्कि राहुल के कहने पर हमने उसमें एक छोटा सा छेद कर दिया था और एक नली लगा दी थी जिसका पानी सीधे इस मैदान में आकर गिरता था।

रविवार वाले दिन राहुल स्वयं यहाँ आकर माली काका के साथ उनकी बागवानी में सहायता करता था और आज देखो इस जैसा सुन्दर बगीचा पूरे शहर में कहीं नहीं है।

सभी छात्रों की आँखों में खुशी के आँसू बह निकले। उनके माता–पिता भी लज्जित थे जिन्होंने कभी बच्चों को पानी के महत्व के बारे में नहीं बताया पर आज इन महकते फूलों ने जैसे उन सबकी सोच को एक नई दिशा दे दी थी। सभी बच्चे और अभिभावक राहुल को बधाई दे रहे थे और मन ही मन प्रतिज्ञा कर रहे थे कि अब वे कभी भी पानी को व्यर्थ नहीं होने देंगे।

• पानीपत (हरियाणा)

संस्कृति प्रश्नमाला

- देवराज इन्द्र ने श्रीराम के लिए जो रथ भेजा उसका सारथी कौन था?
- पाण्डवों के मामा होते हुए भी वे महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर रहने वाले कौन थे?
- आर्यानांबीजम् नाम का प्राचीन देश इस काल में किस नाम से जाना जाता है?
- दक्षिण भारत में भगवान विष्णु को क्या कहा जाता है?
- रामायण के रचनाकार कौन हैं?
- दिल्ली में हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने की प्रेरणा खुसरु खान को किसने दी?
- आचार्य वराह मिहिर ने ग्रह-नक्षत्रों के अध्ययन के लिये विशाल वेधशाला कहाँ स्थापित की थी?
- वर्ष १९१५ में पहली आजाद हिन्द सरकार कहाँ बनी?
- औरंगजेब के हुक्म से आमेर का कौन-सा राजा शिवाजी महाराज से लड़ने गया था?
- हाल ही में सम्पन्न फुटबाल के विश्वकप में किस देश के खिलाड़ियों ने क्षमता बढ़ाने के लिए कबड्डी और योग का अभ्यास किया?

(साभार : पाथेय कण)

(उत्तर इसी अंक में)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

बुरान्श

सिक्किम का राज्यवृक्ष

डॉ. परशुराम शुक्ल

ऊँचे हिम पर्वत का पौधा,
रूप झाड़ियों वाला।
मूलरूप से सिक्किम का यह,
पौधा बड़ा निराला।
धीरे-धीरे विकसित होता,
और फैलता जाता।
दस वर्षों में कठिनाई से,
पाँच फुटा हो पाता।
एक तना पहले उगता फिर,
कई तने हो जाते।
हरे रंग के पत्तों से ये,
सब के सब भर जाते।
आते ही गर्मी का मौसम,
फूल अनोखे आते।
घंटी जैसा रूप दिखाकर,
बच्चों को ललचाते।
रूप बदल कर फिर खिलते ये,
रंग गुलाबी पाते।
अपनी सुन्दर छटा दिखा कर,
वन उपवन महकाते।

• भोपाल (म.प्र.)

।। बंकिमचन्द्र जयंती : २६ जून ।।

वन्देमातरम् के रचनाकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

आलेख : डॉ. हरिप्रसाद दुबे

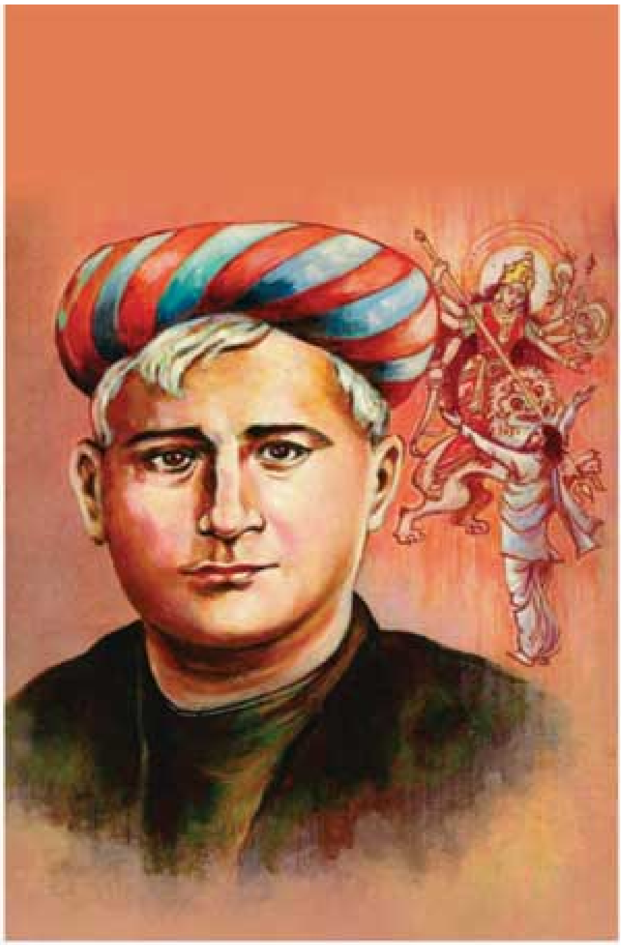

वन्दे मातरम् गीत के रचनाकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म बंगाल के नेहाटी जिले के कांटालपाड़ा ग्राम में २६ जून १८३८ को हुआ था। इनके पिता यादव चन्द्र मिदनापुर में डिप्टी कलेक्टर थे। पाँच वर्ष की आयु में कुल पुरोहित विश्वम्भर भट्टाचार्य के घर शिक्षा आरम्भ हुई। एक वर्ष बाद केलेजियर स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। जूनियर वृत्ति परीक्षा के सात विषयों में से छः विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करके हुगली कॉलेज में गौरव पाया। सीनियर वृत्ति में बीस रूपये मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की गई। बी.ए. उत्तीर्ण करने के बाद ७ अगस्त, १८५८ को यशोहर जिले में डिप्टी कलेक्टर पद पर नियुक्त हुए। भारतीय होने के कारण ३० वर्ष की सेवा के बावजूद इन्हें अंग्रेजों ने कोई पदोन्नति नहीं दी। स्वतंत्रता के प्रति आस्था के कारण स्वेच्छा से पद त्याग दिया। 'वन्दे मातरम्' गीत लिखते समय रामचन्द्र वन्द्योपाध्याय ने बंकिम बाबू से कहा था– ''वन्दे मातरम् से पेट नहीं भरेगा। आप जल्द एक उपन्यास लिखना आरम्भ कर दें।'' इसका उत्तर बंकिम ने कितना सुन्दर दिया था– ''इस गीत का मर्म अभी तुम लोग नहीं समझ सकोगे। अगर पच्चीस वर्ष जीवित रह गए तो देखोगे कि इस गीत के पीछे सारा बंगाल पागल हो उठेगा।'' अपनी पत्रिका में एक प्रेस सामग्री कम पड़ने पर वन्द्योपाध्याय बंकिम के पास गये थे। उन्हें क्या पता था यही गीत कंठहार बनकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का नूतन वेदमंत्र बनेगा। १८८६ में सर्वप्रथम हेमचन्द्र बन्द्योपाध्याय ने कलकत्ता में हुए द्वितीय काँग्रेस अधिवेशन में वन्देमातरम् में कुछ अपनी पंक्तियाँ जोड़कर गाया। २८ दिसम्बर १८९६ को गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने यह गीत शुद्ध रूप से गाया था। दक्षिणारंजन सेन की नवीन स्वर लिपि के साथ १९०१ में वन्देमातरम् का गायन हुआ। बंकिम के संगीत शिक्षक यदुनाथ भट्टाचार्य ने इस गीत की प्रथम धुन बनायी। स्वतंत्रता के बाद त्रिंश कोटि और द्वित्रिंश कोटि के स्थान पर कोटि–कोटि शब्द रखा गया। २४ अगस्त १९४८ को जन गण मन के साथ यह गीत राष्ट्रीय गीत के रूप में आया। बंकिमचंद्र को चुंचड़ा यात्रा से यह गीत लिखने की प्रेरणा मिली। इस गीत के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है – ''मैं एक दिन वर्षाकाल में गंगा तटवर्ती एक भवन में बैठा था– प्रभात काल था। चाँदनी से विस्तीर्ण भागीरथी के वक्ष पर नौकाओं में प्रकाश तरंगों पर चन्द्रमा की किरणें। काव्य का राज्य समुपस्थित हो गया– गंगा–वक्ष से मधुर संगीत ध्वनि उठी, प्राण तृप्त हो गए।

मन को सुर मिला– यह भी समझ गया कि यह जाह्नवी और यह सौन्दर्यमय जगत अपने लगने लगे।'' वन्दे मातरम् गीत १८७४ में, १८८२ में आनन्द मठ, विषवृक्ष, दुर्गेश नन्दिनी, कपाल कुण्डला, सीताराम, देवी चौधुरानी और मृणालिनी उपन्यास की सर्जना बंकिमबाबू ने की। स्वयं को बचाने के लिए वे छद्मनाम से लिखते थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा है –''मैंने जब 'वन्दे मातरम्' गीत को संगीतबद्ध करके गाकर प्रस्तुत किया तो मेरे आपादमस्तक में एक विद्युत तरंग लहरा गयी, शरीर रोमांचित तथा हृदय आवेग कम्पित हो उठा। यह संगीत नहीं वरन ज्वालामुखी से निसृत एक दहकता अंगार था। इसकी एक एक पंक्ति, एक एक शब्द वहां उपस्थित श्रोतावृंद पर छा गया। इस शताब्दी के प्रथम दशक में एक सन्त से प्राप्त इस पवित्र मंत्र ने लार्ड कर्जन जैसे एक दुरभिसन्धिकारी साम्राज्यवादी व्यक्ति के उन्मत्त क्रियाकलापों से पीड़ित राष्ट्र में स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा को सुदृढ़ बना दिया। इस गीत के संवाहक बंकिम बाबू ने राष्ट्रीय अखण्डता और मानवता को सम्पृक्त करने का प्रयास किया।'' अरविन्द ने इसे स्वतंत्रता आंदोलन का नूतन मंत्र माना। १८६० में बंकिम के सहित्यिक गुरु ईश्वरचन्द्र गुप्त ने अपनी एक कविता में सर्वप्रथम भारत को जननी नाम दिया। इसके पूर्व किसी कवि ने भारत को माता नहीं कहा था। दुर्गा पूजा में कीर्तन मंडली के पद से भी वे प्रभावित हुए। देश के पुजारी बंकिमचन्द्र का महाप्रयाण ८ अप्रैल १८९४ को हो गया।

• फैजाबाद (उ.प्र.)

आपकी पाती

• जया मोहन, प्रयाग (उ.प्र.)

देवपुत्र पत्रिका बच्चों के लिए सम्पूर्ण गुणों से भारी पत्रिका है। जो उन्हें मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्द्धक बातों से भी अवगत कराती है। यह सनातन एवं आधुनिकतम दोनों के विषय में बच्चों को जानकारी देती है। बच्चों में संस्कार, ज्ञान का भंडार भरती है, इसका प्रत्येक स्तंभ प्रशंसनीय है। इसका श्रेय आपको व आपकी टीम को जाता है, जो उच्चकोटि के बाल साहित्य का चुनाव कर संप्रेषित करता है। मेरी शुभकामना है कि दिनों दिन इसका परचम उन्नति के शिखर पर फहराता रहे।

*****

• पद्मा चौगांवकर, गंजबासोदा (म.प्र.)

भारत देश की संस्कृति के मूल आधार संयम, सदाचार, सेवा और स्वास्थ्य का जीवन में कितना महत्व है, श्रीराम और अनुज लक्ष्मण के वार्तालाप के माध्यम से, आपने सहज ही बाल पाठकों तक पहुँचाया। देवपुत्र का मुख पृष्ठ सुंदर है। बच्चों का भावपूर्ण फोटोग्राफ! उन पर कुछ पंक्तियां लिखी है...''हम अभिनंदन!''

देशभक्ति का जोश लिये हम बन जायेंगे अभिनंदन।
कैसी भी मुश्किल आ जाये देश की रक्षा पहला प्रण।
हर दुश्मन से लोहा लेंगे, छोड़ के जायें कभी न रण।
कैसे साधन हो अपने दागें मिसाईलें और बम।
देख के मूंछें ये रौबीली दुश्मन डर कर भागेगा,
उसे मान लेना ही होगा, हम हैं सारे केसरी नंदन।

साधनों का उपयोग

प्रसंग : प्रो. जमनालाल बायती

महात्मा गांधी का कोई काम करने का, उसे निपटाने का अपना तरीका था। काम विधिवत एवं तर्कपूर्ण तरीके से सम्पन्न हो यह उनका ध्यान रहता ही था। एक बार गांधी जी पिछले दिन आये पत्रों के उत्तर लिख रहे थे, वैसे वे रोज का काम रोज निपटाने में विश्वास करते थे। पत्रों के उत्तर लिखते समय बापू के पास से मीरा बहन निकल रही थी। तभी बापू की दृष्टि उधर मुड़ गई। गांधीजी ने मीरा बहन को बुलाया। सामान्य चर्चा के बाद बापू बोले–हाथ का काम निपटा कर मुझे नीम की दो पत्तियाँ ला देना। गांधी जी जो भी करते थे पूरी तन्मयता एवं मन से करते थे। उन्हें पता ही नहीं होता था कि पास में क्या हो रहा है?

मीरा बहन ने तत्काल ही नीम के पेड़ की टहनी तोड़ी (जबकि बापू ने दो पत्तियाँ ही मांगी थी) और बापू के पास धीरे से छोड़ दी। चूंकि बापू पत्रों का उत्तर लिख रहे थे अतः मीरा बहन ने उन्हें टहनी वहाँ छोड़ने की जानकारी देना उचित नहीं समझा। वे गांधीजी को पत्रों का उत्तर देते समय बाधा नहीं पहुँचाना चाहती थी।

पत्रों के उत्तर लिखने का काम समाप्त होने पर गांधीजी नीम की पत्तियाँ सम्भालने लगे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि दो पत्तियाँ नहीं, मीरा बहन पूरी डाली ही उनके आसन के पास छोड़ गई हैं। दो पत्तियों की जगह पूरी डाली पाकर बापू का अप्रसन्न होना स्वाभाविक था, अप्रसन्नता मिश्रित दुखी होकर उन्होंने मीरा बहन को बुलाया तथा पूरी डाली तोड़कर लाने का कारण पूछा। बापू अप्रसन्नता दिखाते हुए बोले– ''मुझे तो केवल दो पत्तियों की जरूरत है– पेड़ से अधिक पत्तियाँ लेना संग्रह करने का दोष है। अपरिग्रह व्रत का भंग होना है और इसके लिए मुझे प्रायश्चित करना होगा।''

संध्या में उन्होंने प्रार्थना का समय बताया कि मीरा बहन ने नीम की पत्तियाँ जरूरत से ज्यादा तोड़ कर संग्रह करने की आदत स्पष्टता से बताई और अपरिग्रह व्रत को भंग किया है, अतः मैं अगले दिन उपवास करूंगा और मौन व्रत भी रहेगा।

मीरा बहन के लिए इससे अधिक बड़ी सजा क्या हो सकती थी? मीरा बहन की जगह स्वयं को सजा देकर अपने सम्पर्क में आने वालों को सुधारने का यह गांधी जी का अनूठी पर अपनी पद्धति थी।

• भीलवाड़ा (राज.)

|| योग दिवस : २१ जून ||

योग-तंत्र

कविता : डॉ. रानी कमलेश

योग है जीवन योग है दर्शन
योग स्वास्थ्य का मंत्र है
योग निराशा में आशा है
योग रसायन तंत्र है।

योग नहीं रुक सकता है
मजहब की दीवारों से
कैद नहीं हो सकता है
योग कभी मीनारों से
ऋषियों मुनियों के तप से
भारत की धरती धन्य हुई
वेदों की पावन वाणी से
सबको ही अनुमन्य हुई

भारत योग गुरू था जग में
विश्व गुरू कहलाता था
मान लिया था लोहा सबने
हर कोई शीश झुकाता था

योग से सुन्दर काया बनती
योग सदा अभिराम है
योग है पूजा योग इबादत
गीता और कुरान है।

* अनुमन्य = स्वीकार

● हापुड़ (उ.प्र.)

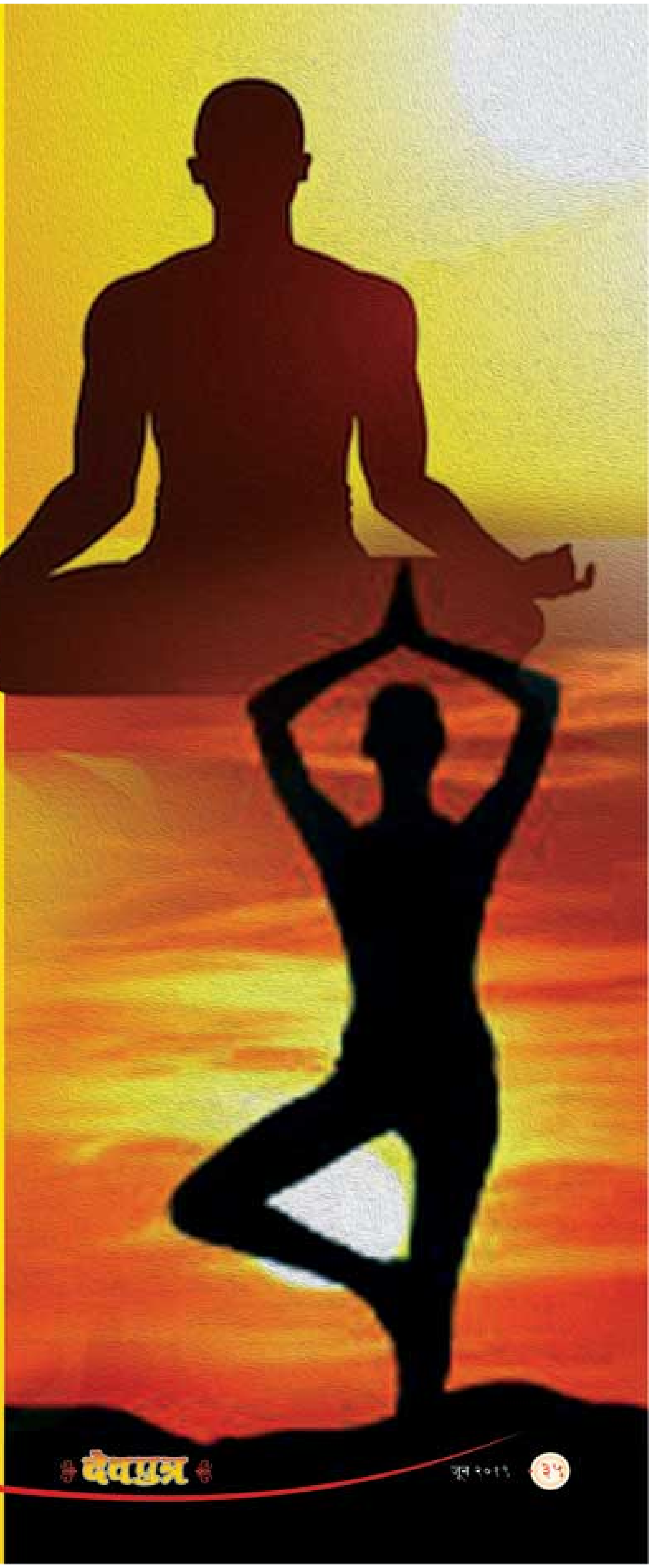

।। बाल प्रस्तुति ।।

सफलता यात्रा है न कि लक्ष्य

आलेख : विजय वैष्णव

कुछ व्यक्ति कड़ा परिश्रम करके सफलता तो प्राप्त कर लेते है परंतु कुछ भ्रमों के कारण वे सफल होते हुए भी असफल हो जाते हैं।

''आकाश बहुत ही होनहार बालक था। वो पढ़ाई में तो आगे था ही लॉन टेनिस जेसे खेल में भी होनहार था। उसने राष्ट्रीय स्तर पर इस खेल में अच्छा प्रदर्शन कर सफलता प्राप्त कर ली, तथा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हो चुका था।

इस सफलता का राज उसके पिताजी के कहे हुए वचन थे। ''बेटे! हमेशा एक निश्चित लक्ष्य बनाओ और उसे प्राप्त करने के लिए कड़ा परिश्रम करो सफलता सदैव प्राप्त होगी।'' आकाश ने दो लक्ष्य बनाये। पहला १०वीं कक्षा में ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करना तथा दूसरा लक्ष्य लॉन टेनिस में अंतराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होना।

आकाश इन दोनों लक्ष्यों के प्रति पूरी लगन से मेहनत कर रहा था।

१०वीं बोर्ड की परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। परिणाम घोषित होने वाला

था। सभी परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। परिणाम घोषित होते ही आकाश फूला न समाया। उसने अपने लक्ष्य से भी अधिक अंक ९२.८३ प्रतिशत प्राप्त कर लिए थे। सभी बहुत प्रसन्न थे। आकाश ने अपना एक लक्ष्य प्राप्त कर लिया अब उसने उस पर परिश्रम करना छोड़ दिया। वह दूसरे लक्ष्य के प्रति अभी भी कड़ा परिश्रम कर रहा था।

अंततः वह दिन भी आ गया उसे लॉन टेनिस में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसका चयन हो गया। आकाश ने वहाँ भी अच्छा प्रदर्शन किया और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हो गया। अब उसने दोनों लक्ष्य प्राप्त कर लिए थे। अब उसने परिश्रम करना छोड़ दिया । फलस्वरूप उसे ११वीं में बहुत कम अंक प्राप्त हुए। अनुतीर्ण होते होते बचा। लॉन टेनिस में भी प्रदर्शन बहुत खराब हुआ। वह मैच बहुत बुरी तरह से हारता गया लगातार ७ मैच हार चुका था। उसका अब कहीं मन नहीं लगता । वह उदास रहने लगा। आकाश के पिताजी ने समझाया –''बेटे! कड़ा परिश्रम कर तुमने अपना लक्ष्य तो प्राप्त कर लिया परन्तु लक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात तुम्हें दुगुना श्रम करने की आवश्यकता थी जो तुमने नहीं की उसी का परिणाम आज तुम्हारे सामने है।''

आकाश के पिताजी उसे जंगल भ्रमण के लिए ले गए। उसने देखा कि एक हिरण शेर के चंगुल से छूटकर आया और अपनी इस सफलता के लिए नाचने लगा उसकी इस भ्रम के कारण शेर ने उसे फिर धर दबोचा तथा मार दिया। उसकी इस गलती की सजा उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

अब आकाश को समझ में आ गया कि ''सफलता यात्रा है न कि लक्ष्य।'' आकाश ने पुनः परिश्रम कर १२वीं ९४.३० प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए तथा लॉन टेनिस में भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपनी गरिमा को बढ़ाया।

• चित्तौड़गढ़ (राज.)

पहुँचाओ तो जानें

• राजेश गुजर

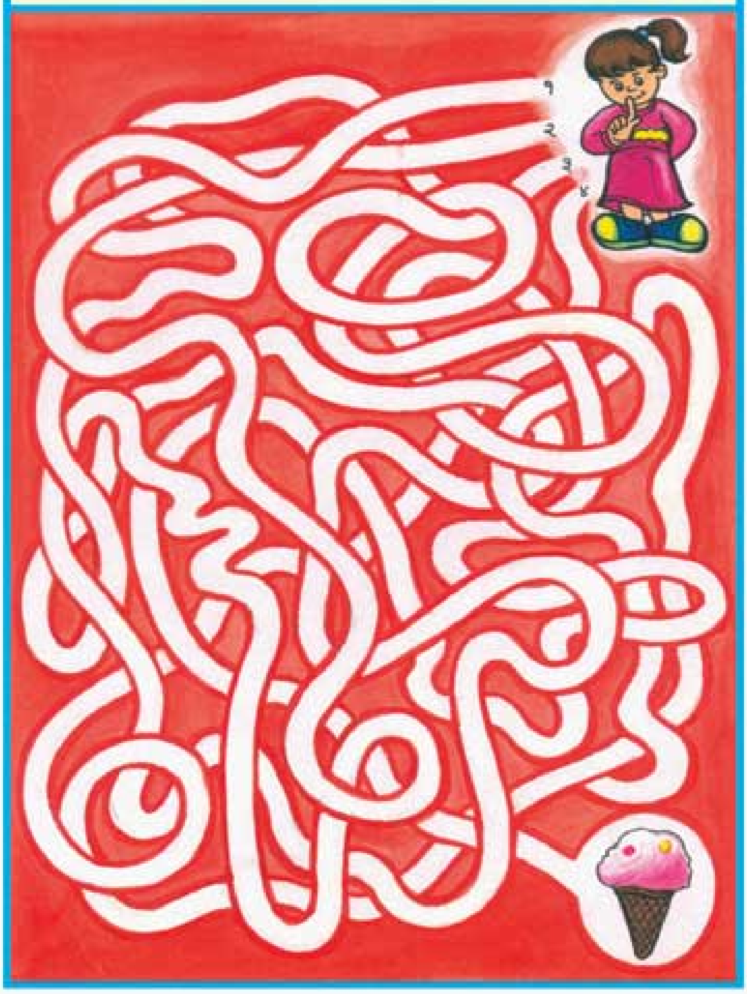

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला - मातलि, मद्रराज शल्य, अजरबेजान, बाला जी, महर्षि वाल्मीकि, देवलदेवी, मिहिरावली (महरौली, दिल्ली), अफगानिस्थान, मिर्जाराजा जयसिंह, इंग्लैण्ड

एक था जंगल

ललित निबंध : अंकुश्री

एक था जंगल। हरा-भरा और घना। उस जंगल में रंग-बिरंगे पौधे थे। वहां छोटी-छोटी घासें थीं तो मोटे और विशाल पेड़ भी थे। जंगल में तरह-तरह के जानवर भी रहा करते थे।

जंगल में शेर की दहाड़ सुनायी पड़ती थी। वहाँ झुंड में कुलांचे भरते हिरण दिखाई देते थे। हाथी, भालू, बंदर, गेंडा, गौर, खरगोश, साही आदि जानवरों से जंगल भरा हुआ था। चिड़ियां इतनी थी कि उनकी चहचहाहट से पूरा जंगल गुंजित रहता था। विभिन्न पेड़-पौधों और तरह-तरह के जानवरों से भरा जंगल बहुत खुश था।

एक दिन जंगल में जोर-जोर से आवाज सुनाई पड़ने लगी। ...खट्ट...खट्ट...खट्ट... कुछ आदमी कुल्हाड़ी लेकर जंगल में घुस आये थे। वे पेड़ों को काट रहे थे। कुल्हाड़ी की आवाज से जंगल में भय समा गया। जानवर भी भयभीत हो गए। पेड़ों में हाहाकार मच गया। पेड़ कटने का समाचार पत्तों की सरसराहट से पूरे जंगल में फैल गया। खट्ट...खट्ट की आवाज से जंगल भयभीत था ही, पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों को भयभीत देख कर वह घबरा गया।

कुल्हाड़ी की हर खट्ट की आवाज से जानवरों के कान झट से खड़े हो जाते थे। कुल्हाड़ी चलने से पेड़ की डाल-डाल डोलने लगती थी। पत्ता-पत्ता कांप उठता था। कुल्हाड़ी चलती रही। जानवर चौकस होकर इधर से उधर भागते रहे। पेड़ भय से कांपते रहे। जंगल के प्राणों पर बन आई। जैसे जैसे पेड़ों पर कुल्हाड़ी की मार पड़ती थी वैसे वैसे जंगल रोता था। जब कोई पेड़ कट कर गिरता तो जंगल जोरों से चीख पड़ता था। उसके चीखने की आवाज दूर तक फैल जाती थी।

खट्ट-खट्ट-खट्ट!! कुल्हाड़ी चलती रही। एक दो तीन....!!! पेड़ गिरते रह न कुल्हाड़ी का चलना बंद हुआ न पेड़ों का गिरना रुका। जंगल में रोज कुल्हाड़ी चलती रही। कभी इधर तो कभी उधर कुल्हाड़ी चलने का सिलसिला कभी खत्म नहीं हुआ। धीरे-धीरे पूरा जंगल वीरान होने लगा।

पहले बहुत से जानवर पेड़ों की झुरमुट में छिपे रहते थे। लेकिन लगातार कटते रहने से जंगल का घनापन कम हो गया। बेचारे जानवर अपना आवास छोड़ छोड़ कर भागने लगे। मगर वे जिधर जाते, उधर खट्ट-खट्ट की आवाज सुनायी पड़ती थी। कट कर गिरते हुए पेड़ों का धड़ाम-धुड़ाम सुनायी पड़ती। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वे जाये तो किधर और रहे तो कहाँ?

जंगल के जानवरों का राजा शेर था। वह जहाँ रहता था उसके आसपास के पेड़ भी काट डाले गये। बेचारा कहाँ रहे! तेंदुआ का भी यही हाल था। जंगल में उसके रहने-छिपने की जगह समाप्त हो गई। सभी हिंसक जानवर अपना-अपना घर छोड़ कर भाग खड़े हुए। लेकिन वे जायें तो कहा जायें। इनमें से कुछ जानवर धान के खेत में शहीद हो गये। कुछ गन्ने के खेतों में मारे गए।

मांसाहारी बड़े जानवरों के

जंगल से चले जाने से बहुत से छोटे जानवर बहुत खुश हुए। उन्हें हिंसक जानवरों का बराबर भय बना रहता था। उन्हें लगा कि वे निर्भीक हो गये है। लेकिन उनकी खुशी और निर्भीकता कुछ दिनों तक भी नहीं रह पाई।

जैसे–जैसे हिंसक जानवर जंगल से हटते गए, वहाँ मनुष्यों का आना जाना बढ़ गया। हिंसक जानवरों से भयभीत छोटे जानवरों को आदमी का भय सताने लगा। घने जंगल में उनके छिपने का कोई स्थान नहीं बचा था। वे जंगल में कुछ दिनों तक इधर से उधर भागते रहे। वे भाग रहे थे। बस भागते रहे। उनका कोई ठौर नहीं बचा। क ा ` इ ´ ठिक

ाना नहीं बचा। रोज रोज के भाग–दौड़ के कारण वे विनष्ट हो गए। उनका घर परिवार तहस–नहस हो गया।

चिड़ियों का भी यही हाल था। पेड़ों पर उनके घोंसले थे। घोंसले में उनका बसेरा था। पेड़ कटने से उनके घोंसले बिखर गये। अंडे टूट गए। बिना बसेरा या बिना अंडा का उनका क्या अस्तित्व? वे कब तक रह पाती। बेचारी इधर से उधर उड़ती फिरीं। इस दौरान कुछ चिड़ियाएं जानवरों द्वारा मारी गई। कुछ आदमी का शिकार हो गई। बची हुई चिड़ियों का जीवन तो किसी प्रकार बीत गया। लेकिन उनकी वंश वृद्धि नहीं हो पाई।

जंगल में पेड़–पौधे कट गए, पशु–पक्षी समाप्त हो गए। जंगल केवल कहने को जंगल रह गया था। उसमें जंगल का कोई गुण नहीं बचा था। सच्चाई यही थी कि जंगल की जगह उसकी जमीन बच गई थी। झाड़ी और कुछ छोटे पौधे कहीं–कहीं दिख जाते थे। जंगल शेर की दहाड़ सुनने के लिए तरसने लगा। उसकी आँखें तरसती थीं कि दौड़ता हुआ कोई जानवर दिख जाये। फुदकती चिड़ियों की चहचहाहट सुनने के लिए उसके कान बैचेन रहने लगे। मगर सब बेकार। विशाल पेड़–पौधे और उछलते–चहकते पशु–पक्षी सपना हो चुके थे।

कलपता हुआ जंगल बरसात के दिनों में गलने लगा। जब वर्षा होती, उसकी मिट्टी गल–गल कर बह जाती थी। पहले पेड़ों की जड़ें मिट्टी के अंदर फैली हुई थीं, वे जड़ें मिट्टी को बहने से रोक लिया करती थी। लेकिन जब पेड़ ही कट गए तो कटनी मिट्टी को कौन रोके? जंगल की मिट्टी बह–बह कर नदियों में जमने लगी।

पेड़ों के कटने का प्रभाव वर्षा पर भी पड़ा। जंगल और उसके दूर–दराज के क्षेत्रों में अच्छी वर्षा हुआ करती थी। अब वर्षा कम होने लगी थी। नदियों में पहले ही मिट्टी भर गयी थी। बारिश का पानी नदियों में नहीं समा पाता था। पानी बाढ़ के रूप में गाँवों–बस्तियों में समाने लगा। मिट्टी भरी नदियों की क्या क्षमता? गरमी के दिनों में सुखाड़ से हाहाकार बचने लगा।

मुर्गी तभी तक अंडा देती है, जब तक वह जीवित रहती है। पेट चीर देने के बाद मुर्गी अंडा देना बंद कर देती है। कुल्हाड़ी से काट–काट कर उजाड़ा गया जंगल कितना लाभ दे? उस जंगल के उजड़ जाने से आदमी परेशान हो गया।

उजड़ा हुआ वह जंगल आज भी है। लोगों को परेशान होते देख कर उसे बहुत दुःख होता है। दुःख से कातर हो कर वह रोने भी लगता है। लेकिन बेचारा उजड़ा हुआ जंगल करे तो क्या? आस–पास के बड़े–बुजुर्ग बच्चों को आज भी बताते हैं। वे कहते हैं कि यहां हरा भरा और घना एक जंगल था।

• रांची (झारखण्ड)

मनोरंजक चित्र पहेलियां

• चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़तासिटी (राज.)

(उत्तर इसी अंक में)

छुट्टियों के दिन

कविता : डॉ. कविता विकास

छुट्टियों के दिन आते हैं
हमको बहुत लुभाते हैं।
गर्मी है मौसम आमों का
जामुन, लीची और इमली का।
मुँह में भर लेते हैं चटकारे
कितने स्वादु ये प्यारे-प्यारे।
सर्दी में जब सोने का दिल करता
शाला का समय बहुत अखरता।
और बारिश का तो न पूछो हाल
बिन छतरी भीग कर होते बेहाल।
करते हैं छुट्टियों में जी भर मस्ती
गृहकार्य से मिलती है मुक्ति।
कोई तनाव नहीं स्कूल का
जल्दी सोने, जल्दी उठने का।
जी करता है बीते न कभी छुट्टियां
बस थम जाएँ वहीं घड़ी की सुइयां।

• कोयला नगर (झारखण्ड)

मोर दादा

कविता : रजनी शर्मा बस्तरिया

शानू, मानू है हमजोली।
मोर से यूँ तुतलाते बोली।।

आप हमारे प्यारे दादा।
नहीं चलेगा सादा सादा।।

साथ हमारे नाचो ज्यादा।
पूरा करिये अपना वादा।।

दादा बोले भानू, मानू।
इंद्रधनुष लाओ जो जानू।।

बरखा होकर निकले धूप।
खुश होकर मैं नाचूं खूब।।

• रायपुर (छ.ग.)

छोटी बड़ी वीणा

बच्चो, विश्व संगीत दिवस पर इन दस वीणाओं
को छोटी से बड़ी क्रम में जमाओ।

(उत्तर इसी अंक में)

चुटकुले

– विष्णुप्रसाद चौहान

सोनू को अस्पताल से छुट्टी की जा रही थी, मगर वह लगातार रो रहा था। डाक्टर ने पूछा- ''तुम्हें तो खुश होना चाहिए, तुम रो क्यों रहे हो ?''

सोनू- डाक्टर सा. जिस गाड़ी से मेरी दुर्घटना हुई थी, उस पर लिखा था ''फिर मिलेंगे''

*****

मोनू- ''डाक्टर सा. आपने दो-दो थर्मामीटर क्यों रखे है?''

डाक्टर- ''एक थर्मामीटर से पता चलता है कि तुम्हें कितना बुखार है। दूसरे से पता चलता है तुम्हारी जेब कितनी गर्म है।''

*****

राजकिशोर- तुम्हें याद होगा एक बार जब मैं तुम्हारे होटल में खाना खाने आया था। खाने के बाद मेरे पास बिल चुकाने के लिए पैसे नहीं थे। तब तुमने मुझे धक्का देकर बाहर निकाल दिया था।

नौकर (लज्जित होते हुए)- मुझे माफ कर दीजिए मुझसे बड़ी भूल हो गई थी।

राजकिशोर- ''कोई बात नहीं! मैंने खाना खा लिया है पर मेरे पास आज भी बिल चुकाने के पैसे नहीं हैं।''

*****

शर्मा जी - (गुप्ता जी से) क्यों भाई! आज कार्यक्रम में मल्होत्रा जी का मुंह क्यों लटका हुआ था।

गुप्ता जी - क्योंकि उनके गले में सिर्फ एक माला डाली गई थी जबकि उन्होंने अपने लिए चार मालाओं के पैसे दिए थे।

*****

मालिक (गुस्से में) क्या तुम समझते हो कि मैं बेवकूफ हूँ!''

नौकर- ''हुजूर यह मैं कैसे कह सकता हूँ। मैं तो कल ही आया हूँ।

• ढाबला खुर्द (म.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

पहेलियाँ

• नमन श्रीवास्तव

अत्थर पर पत्थर,
पत्थर पर पैसा।
बिना पानी का महल बनाया,
वह कारीगर कैसा।।

***

आर-आर की हुई लड़ाई, एस के चोरी जाने से।
एल जलकर के भस्म हो गई, एच के आग लगाने से।।

- बुढ़ार (म.प्र.)

(उत्तर इसी अंक में)

गाँव की ओर

कहानी : किशनलाल शर्मा

झब्बू और कालू आमने सामने के मोहल्लों में रहते थे। दोनों कुत्तों में गहरी मित्रता थी। प्रतिदिन प्रातः वे अपने –अपने मोहल्ले से निकल कर सड़क पर आ जाते। सुबह सड़क पर घूमने जाने वाले का तांता लग जाता। हर आयु हर वर्ग के लोग घूमने के लिए जाते थे। वे दोनों मित्र भी प्रतिदिन सुबह घूमने जाते थे। घूमते समय वे एक दूसरे को पूरे दिन के समाचार बताते।

आज भी झब्बू सड़क पर आकर खड़ा हो गया था, लेकिन काफी देर तक कालू नहीं आया, तो वह चिन्तित हो उठा। कहीं उसका स्वास्थ्य खराब तो नहीं हो गया। उसे देखने के लिए वह मोहल्ले में गया। उसने पूरा मोहल्ला छान मारा, लेकिन कालू कहीं दिखा नहीं। कहीं आज अकेले ही तो घूमने नहीं चला गया। वह सड़क पर भाग कर कालू को देखने लगा। काफी दूर भागने के बाद उसे कालू शहर के बाहर जाने वाली सड़क पर दिख गया। झब्बू दौड़कर उसके पास जाकर बोला, ''कालू, तुम कहाँ जा रहे हो?''

''गाँव जा रहा हूँ।''

''गाँव?'' कालू की बात सुनकर झब्बू आश्चर्य से बोला।

''हाँ! मैं गाँव ही जा रहा हूँ।'' कालू बोला।

''तुम शहर में पैदा हुए। तुम्हारे मुँह से कभी नहीं सुना कि गाँव में तुम्हारा कोई नाते रिश्तेदार है। फिर तुम गाँव क्यों जा रहे हो? कालू की बात सुनकर झब्बू ने पूछा।

''तुम ठीक कह रहे हो। गाँव में मेरा कोई नहीं है। लेकिन मैं गाँव ही जा रहा हूँ।''

कालू बोला, ''जिंदगी के शेष दिन अब मैं गाँव में हर कर ही काटूँगा।''

''लेकिन अचानक तुम्हारे मन में गाँव में रहने का विचार कैसे आया?'' झब्बू फिर बोला।

''देश की राजधानी में वाहन कितने बढ़ गए हैं। वाहनों से निकलने वाले धुंए से वातावरण प्रदूषित हो गया है। हवा विषैली हो गई है। धुएं में दम घुटता है। सांस लेने में दिक्कत होती है।

''तुम्हारी बात सही है। इस पर सर्वोच्च न्यायालय ने भी संज्ञान लिया है। प्रदूषण दूर करने के लिए न्यायालय ने कई उपाय किए हैं। दिशा निर्देश दिये हैं।'' कालू की बात सुनकर झब्बू बोला था।

''उसकी कौन सुनता है। दण्ड भी कितने लोगों को पकड़ कर दिया जा सकता है अगर हम ही नहीं समझें। न्यायालय ने दिवाली पर रात आठ बजे से दस बजे के बीच कम आवाज वाले फटाके चलाने के निर्देश दिये थे। लेकिन क्या हुआ? दिवाली पर पूरी रात फटाके चलते रहे। फटाकों के धुएं और आवाज से मैं पूरी रात परेशान रहा।''

''तुम बात तो सही कह रहे हो, लेकिन गाँव में शहर जैसा मजा कहाँ? यहाँ प्रतिदिन किसी न किसी कोठी से बाहर अच्छे-अच्छे पकवान खाने को मिल जाते हैं। गाँव में तो हो सकता है तुम्हें सूखी रोटी भी प्राप्त न हो।''

''तुम ठीक कह रहे हो। हो सकता है, गाँव में किसी दिन भूखा भी सोना पड़े। झब्बू की बात सुनकर कालू बोला, ''लेकिन गाँव में सांस लेने के लिए शुद्ध ताजी हवा तो मिलेगी।''

''सही कह रहे हो मित्र। जब तुम चले जाओगे, तो मैं यहाँ अकेला रह कर क्या करूँगा? मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।''

और दोनों गाँव के लिए चल दिए।

• **आगरा (उ.प्र.)**

क्षणिका

बड़ों का
आशीर्वाद चाहिए
तो बढ़ पाइये।

• **डॉ नरेन्द्रनाथ लाहा (ग्वालियर) म.प्र.**

सही उत्तर

उलझ गए - राजू ने अपनी बड़ी बहिन का चित्र हाथ में लिया हुआ है।

बड़ा छोटा - ६, १०, ५, २, ७, ८, ३, १, ४, ९

बूझो पहेली - (१) दीमक (२) R राम, R रावण, S सीता L लंका, H हनुमान

मनोरंजक चित्र पहेली -

(१) मुँह गिरगिट का, धड़ मगरमच्छ का, पैर मेंढक के, पूँछ मछली की है।

(२) गायें ५ हैं

(३) मीरा बाई की माता का नाम वीर कंवरी और पिता का नाम रतनसिंह।

पुस्तक परिचय

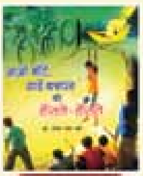

मूल्य ७०/-

पृष्ठ ६०

आओ बाँटे, यादें बचपन की हँसते हँसते- प्रसिद्ध बाल रचनाकार डॉ. रमेशचन्द्र खरे की भीष्म सिंह चौहान बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत बाल गीतों में बाल्यकाल की स्मृतियों से भरपूर कृति।

प्रकाशन –जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.) २८१००१

मूल्य ४०/-

पृष्ठ ४४

मेरी बेटी मेरी बेटी- श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' की बेटी के प्रति वात्सल्य पूरित भावों की अनूठी काव्य कृति।

प्रकाशन – राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' ५९, सुन्दर नगर एक्स., सुखलिया, इन्दौर १० (म.प्र.)

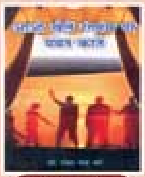

मूल्य ५०/-

पृष्ठ ६४

आओ खेलें रंगमंच पर मंथन करते करते- डॉ. रमेश चन्द्र खरे की किशोर बच्चों को रोचक नाटकों के माध्यम से श्रमदान, मद्यनिषेध, सहकार, सुराज, शिक्षा आदि विषयों पर प्रबोधित करती कृति।

प्रकाशन – जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.) २८१०००

मूल्य १००/-

पृष्ठ २०

मंगल ग्रह के जुगनू (४) – श्री प्रबोध कुमार गोविल रचित सम्पूर्ण बहुरंगी एवं चित्रमय रोचक कथा पुस्तक।

प्रकाशन – राही सहयोग संस्थान, बी–३०१ मंगलम् जागृति रेजीडेंसी, ४४७, कृपलानी मार्ग, आदर्श नगर, जयपुर ३०२००५ (राज.)

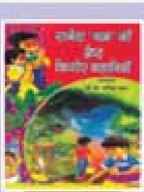

मूल्य ९५०/-

पृष्ठ ४००

राकेश चक्र की श्रेष्ठ किशोर कहानियाँ- प्रप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. मो. साजिद खान की संपादित डॉ. राकेश चक्र की ४८ कहानियां।

प्रकाशन – पंकज सिंह सेहबरपुर, रतनपुरा, जिला मऊ २२१७०६ (उ.प्र.)

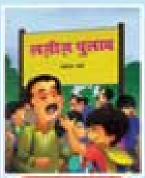

मूल्य ११०/-

पृष्ठ ७४

लजीज पुलाव- विख्यात बाल साहित्यकार डॉ. राकेश चक्र की बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित रोचक १६ कहानियाँ।

प्रकाशन – प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. सी जी ओ काम्प्लेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली ०३

नानी सुनाओ नई कहानी

कविता : महावीर रवांल्टा

गुड्डे-गुड़िया की बात पुरानी
नानी सुनाओ नई कहानी,
कहाँ से आते मेघ गगन में
धरती पर क्यों बरसे पानी?
क्यों ढलता सूरज संध्या को
कैसे होती भोर सुहानी,
नभ में क्यों दिखते हैं तारे?
इसका राज बताओ नानी।
सूरज कितने दूर हैं हमसे
रहते कहाँ हैं चंदा मामा,
तारे क्यों टिमटिम करते हैं
घटते-बढ़ते चंदा मामा?
क्यों बहती है नदिया कल-कल
वह क्या हमसे कहती है,
गरजन करते नभ में बादल
हवा क्यों सर-सर बहती है?
उगते पेड़ धरा पर कैसे
कौन उन्हें उपजाता है,
धरती माता लगती सुंदर
कौन उसको सजाता है?

● पुरोला (उत्तराखण्ड)

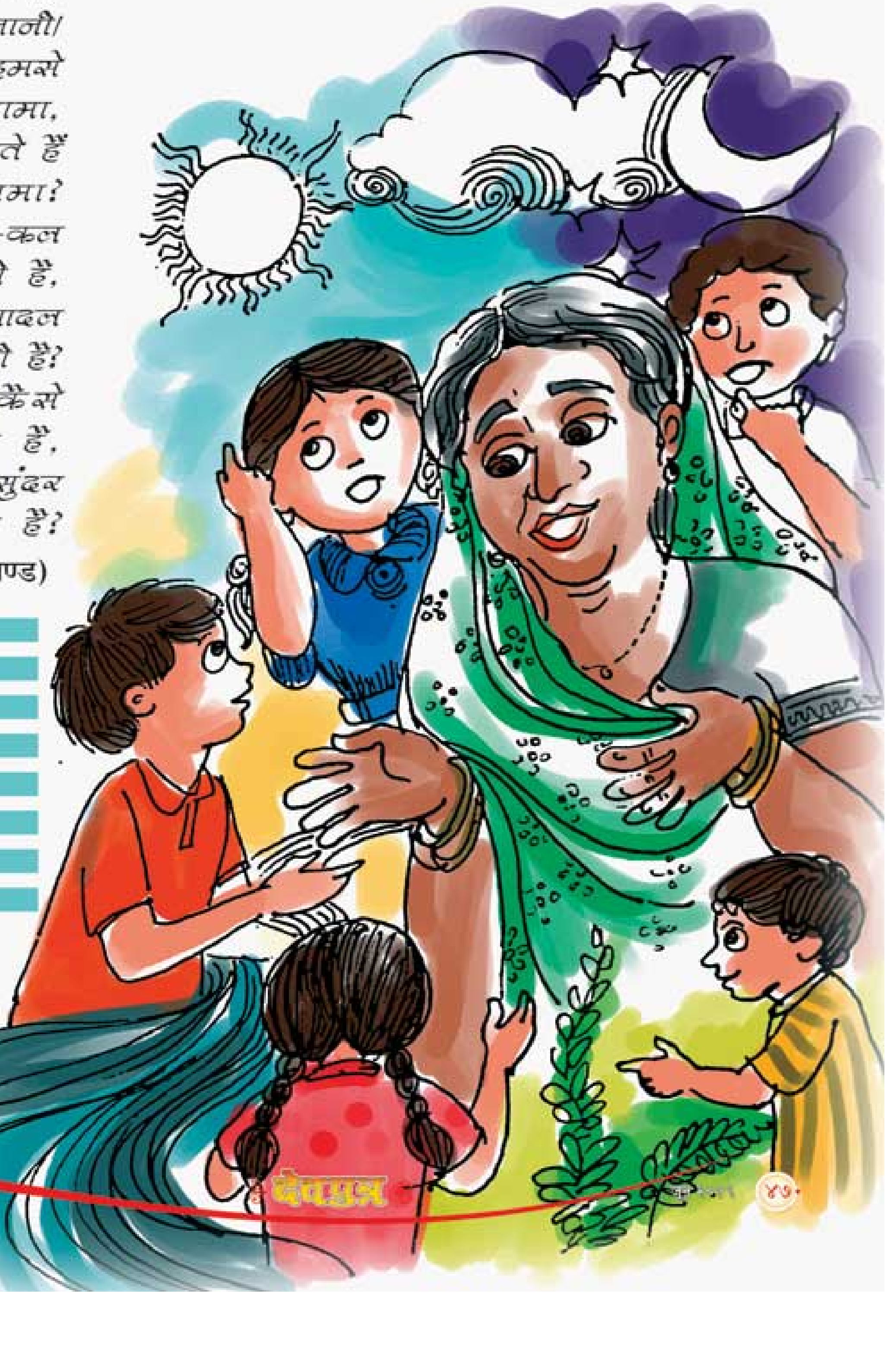

।। विश्व संगीत दिवस : २१ जून ।।

अद्वितीय गुरु

स्वामी हरिदास

(संगीतकार परिचय)

स्वामी हरिदास भारत के बड़े उच्चकोटि के कलाकारों में से हुए हैं। इनका काल १४८० से १५७५ के बीच माना जाता है। यह अधिकतर वृन्दावन में ही रहा करते थे। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध गायक तानसेन इन्हीं के शिष्य थे। एक बार जब अकबर तानसेन के गाने से बहुत ही ज्यादा प्रसन्न हुए और बहुत प्रशंसा करने लगे तो तानसेन ने हाथ जोड़कर अर्ज किया, ''अगर आप मेरे गुरु जी का गायन सुनें तो उन्हें मालूम होगा कि संगीत क्या चीज है।''

अकबर को यह सुनकर बड़ी उत्सुकता पैदा हुई। उन्होंने तुरंत आदेश दिया कि उन्हें जल्दी से जल्दी बुलवाया जाए।

तानसेन ने फिर निवेदन किया, ''वह तो त्यागी पुरुष हैं। सारी दुनिया से नाता छोड़ चुके हैं तथा वृन्दावन के एक मठ में भजन किया करते हैं। अक्सर वह जंगलों में निकल जाते हैं और वहीं विश्राम करते हैं।''

यह सुनकर अकबर स्वयं वृन्दावन जाने पर तैयार हो गया और तानसेन से कहा कि किसी दिन वृन्दावन चलेंगे और किसी भी तरह उनका गायन अवश्य सुनेंगे। एक दिन समय निकालकर वह ओर तानसेन के साथ वृन्दावन जा पहुँचे। वहाँ पता चला कि हरिदास स्वामी कुछ दूर पर एक जंगल के अन्दर रहते हैं। खोज करते-करते तानसेन और अकबर दोनों स्वामी जी के पास पहुँच गए। स्वामी जी अपने शिष्य को देखकर प्रसन्न हुए। अकबर अपना वेश बदले हुए था। तानसेन ने इन्हें अपना शिष्य बताया। थोड़ी देर बाद ही तानसेन ने गुरु जी से प्रार्थना की, ''बहुत दिन से आपका मधुर संगीत नहीं सुना। आज यदि कृपा करें तो हमारे कान पवित्र हो जाएँ।''

गुरुजी की अनुमति पाकर तानसेन ने तम्बूरा उठाकर मिलाया और गुरुजी के पास बैठकर छेड़ने लगे। स्वामी जी ने गाना शुरु किया और इस ढंग से अलाप करने लगे कि तानसेन और अकबर दोनों पर जादू सा प्रभाव पड़ा। चेतना लुप्त सी होने लगी। स्थिति यहाँ तक पहुँची कि एक को दूसरे की सुध न रही। मानो वे अपनी देह से परे किसी आनंदलोक में जा पहुँचे हो। थोड़ी देर बाद स्वामी जी गायन बन्द करके जंगल में किसी तरफ को चले गए। जब इन दोनों को चेत आया तो देखा कि न गाना ही है, न स्वामी जी ही। दोनों दिल्ली वापस लौट आये। अकबर ने अनुभव किया कि सचमुच संगीत का कोई पार नहीं है।

अप्रतिम शिष्य
संगीत सम्राट तानसेन
(संगीतकार परिचय)

तानसेन (रामतनु) गौड़ ब्राह्मण थे। उनकी बानी गौंड़ी थी जो बाद में गोबरहारी मशहूर हो गई। इनके पिता का नाम मुकुन्द पांडे था। सुना है कि ग्वालियर राज्य के किसी गाँव में इनका जन्म १५०६ ई. में हुआ। जब होश संभाला तो ग्वालियर आये और हजरत मुहम्मद गौस ग्वालियरी से निवेदन किया कि मुझे गायन कला बहुत प्रिय है। हजरत ने कहा– ''जा, वृन्दावन में तुझे गुरु मिलेंगे।'' यह आदेश पाते ही इन्होंने वृन्दावन की राह ली, जहाँ हरिदास स्वामी जैसे महान कलाकार थे। तानसेन इनके पैरों पर जा गिरे और अपने हृदय की अभिलाषा प्रकट की। स्वामी जी ने बहुत प्रेम से इन्हें सिखाना शुरु किया और बरसों इनको गायन कला की शिक्षा देते रहे। तानसेन गुरु जी की सेवा से कभी न थकते थे और सीखने तथा श्रम करने में जी तोड़कर प्रयत्न करते थे। शिक्षा पूरी करने के बाद यह रीवा के महाराज रामचन्द्र बाघेला के यहाँ जाकर रहने लगे। धीरे–धीरे अकबर ने इनकी कला की प्रशंसा सुनी और इन्हें रीवा से दिल्ली बुलवा भेजा। जब यह का आदेश रीवा के नरेश के पास पहुँचा तो उन्होंने तानसेन को बड़े सम्मान के साथ विदा किया। कहा जाता है कि जिस पालकी पर सवार होकर तानसेन दिल्ली के लिए चले उसमें बहुत दूर तक स्वयं रीवा नरेश ने कन्धा दिया था। दिल्ली में अकबर इनके गाने से बहुत प्रसन्न हुआ और इनको अपने दरबार में नवरत्नों में स्थान दिया। अबुलफजल ने अपनी पुस्तक 'आइने अकबरी' में इनकी बहुत प्रशंसा की है और यह भी लिखा है कि एक हजार साल में ऐसा गवैया पैदा नहीं हुआ। तानसेन ने ध्रुपद भी बहुत से बनाए थे और कुछ घरानों में इनकी चीजें आज भी सुनने में आती है। इनकी मृत्यु १५८९ में आगरा (उ.प्र.) में हुई।

बनाओ सजाओ सिंह

• राजेश गुजर

बच्चों, तुम्हारे घर में प्लास्टिक का पुराना गिलास और गेंद है तो उसे फेंकना मत, उससे एक नया खिलौना बन सकता है। कुछ इन चीजों की जरूरत पड़ेगी – धागे की चार खाली रीलें, सेलोटेप, चिपकाने वाला पदार्थ फेविकोल, थोड़ी सी रूई, धातु के तार का टुकड़ा, रंग एवं ब्रश।

१. सबसे पहले सेलोटेप की सहायता से गिलास और गेंद को जोड़ दो और फेविकोल से चिपका दो। इसे सूखने दो।

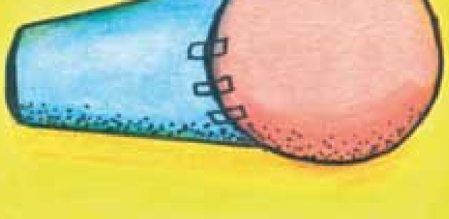

२. अब फेविकोल की मदद से चार खाली रीलों को गिलास से पैरों की तरह चिपका दो। इन्हें अच्छी तरह सूखने दो।

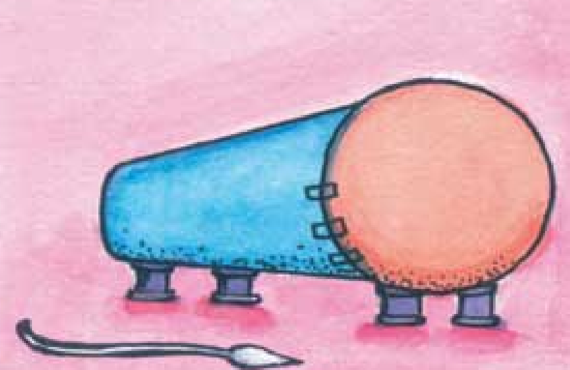

तार को रूई से चिपकाकर पूँछ बना लें।

३. इस तार को गिलास के पीछे टेप से या फेविकोल से चिपका दें। रंग पूरे शरीर पर करें, अब चित्रानुसार रंगों को ब्रश की सहायता से सिंह की आँखें, नाक, मुँह व बाल की आकृति बनाओ। तैयार है सिंह –

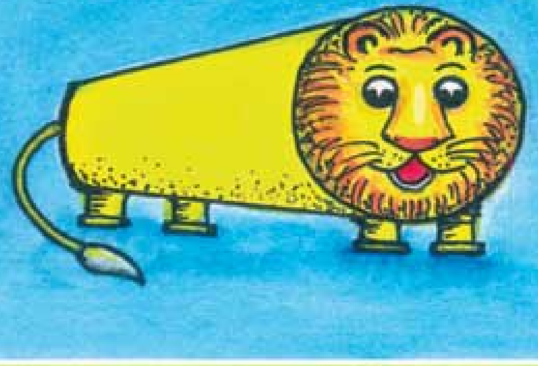

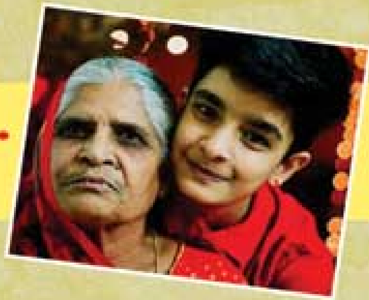

किस्से–कहानी...
दादी–नानी जैसे।

संस्कार...
माँ के प्यार जैसा।

मार्गदर्शन...
पिता जैसा।

बहुत सा ज्ञान
मित्रों जैसा।

यह सब कुछ और बहुत कुछ एक साथ...

मेरा परिवार
भारतीय परिवार

अपने
देवपुत्र में
बिल्कुल अपनों जैसा।

४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०   आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०५/२०१९   प्रेषण तिथि ३०/०५/२०१९   प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना